रविवार
25 जून 2023

पृष्ठ 4

गर्मियों में करना चाहिए हरे अंगूर का सेवन

पृष्ठ 5

शाहरुख खान संग कॉफी विद करण में डेब्यू करेंगे आर्यन खान

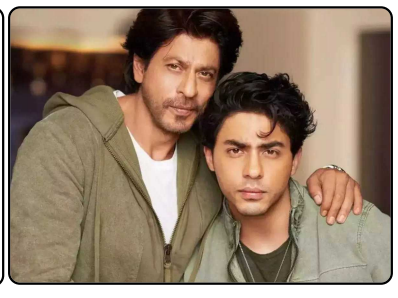

● देहरादून
● वर्ष 31
● अंक 142
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

आज का विचार

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है।

– रवींद्रनाथ ठाकुर

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

आर.एन.आई.- 59626/94

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

आकाशीय बिजली गिरने से एक व्यक्ति की मौत तीन घायल

हमारे संवाददाता

देहरादून। राज्य में हो रही भारी बारिश के बीच जहां एक स्थान पर बिजली गिरने से एक युवक की मौत व तीन घायल हुए है। वहीं दूसरे स्थान पर गिरी बिजली की चपेट में आकर 400 बकरियों की मौत हो गयी है।

आकाशीय बिजली गिरने की एक घटना उत्तरकाशी के पुरोला तहसील के अंतर्गत ग्राम कंडियाल में हुई है। यहां ग्राम कंडियाल गांव में खेतों में काम कर रहे ग्रामीणों के ऊपर आकाशीय बिजली गिरने से उसकी चपेट में आने से अभिषेक(20)पुत्र धीरपाल सिंह की मौत

❑400 बकरियों ने भी दम तोड़ा

हो गई। जबकि निखिल (17)पुत्र खुशपाल अशोक (14)पुत्र धीरपाल व चंद्र सिंह (58) पुत्र जयपाल सिंह गंभीर घायल हो गए। घायलों को उपचार के बार हायर सेंटर रैफ कर दिया गया है। आकाशीय

बिजली गिरने का दूसरा मामला जनपद बागेश्वर में सामने आया है। यहां झुनी पांखुटॉप में बिजली का कहर आफत बनकर टूटा। यहां बिजली की चपेट में आकर चरवाहों की 400 बकरियों की मौत हो गयी है। सूचना मिलते ही पशुपालन और राजस्व विभाग की टीम झुनी के लिए रवाना हुई, मौके पर मुआयने के दौरान घटनास्थल पर बिजली गिरने से 400 बकरियों की मौत होने की पुष्टि हुई है। जिससे चरवाहों का भारी नुकसान हुआ है। विधायक कपकोट सुरेश गढ़िया ने दूरभाष के माध्यम से राजस्व टीम और पशुपालन विभाग को नुकसान का मुआयना कर शीघ्रता मुआवजे की कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

भारी बारिश के बाद रोकी गई केदारनाथ यात्रा

हमारे संवाददाता

रुद्रप्रयाग। रविवार को उत्तराखंड के कई जिलों में भारी बारिश हुई। इस बीच प्रशासन ने फिलहाल केदारनाथ यात्रा को रोक दिया है। सोनप्रयाग में केदारनाथ यात्रा को रोका गया है। भारी बारिश से बने हालात को देखते हुए श्रद्धालुओं को सोनप्रयाग में रोका गया। रुद्रप्रयाग जिले में हुई भारी बारिश को देखते हुए प्रशासन ने यह यह निर्णय लिया है। रुद्रप्रयाग के डीएम मयूर दीक्षित ने मीडिया को यह जानकारी दी है। केदारनाथ यात्रा अगले आदेश तक रोक दी गई है। उत्तरकाशी में खेत में काम कर रहे तीन लोग आकाशीय बिजली की चपेट में आने से घायल हो गए हैं।

मौसम विभाग के मुताबिक, हरिद्वार में पिछले 24 घंटे में 78एमएम बारिश दर्ज की गई है। इसी तरह देहरादून में 33.2 और उत्तरकाशी में 27.7 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई है। आपदा प्रबंधन विभाग के अधिकारियों को सीएम ने निर्देश देते हुए कहा कि राज्य में आगे भारी बारिश के हालात बन रहे हैं। सीएम ने निर्देश देते हुए कहा कि सभी राज्यों से म्यूचुअल कम्यूनिकेश और कोऑर्डिनेशन बनाए रखें ताकि आपातकालीन हालत में समय पर कार्रवाई की जा सके। सीएम ने इसके साथ ही अधिकारियों का आदेश दिया है कि हमेशा अलर्ट की स्थिति में रहें ताकि लोगों को समय रहते किसी भी आपदा से बचाया जा सकें। इसके साथ ही मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने नदियों के नजदीक रहने वाले लोगों को वहां से निकालना चाहिए। सीएम ने कहा कि लोगों को पुनर्वास करने की स्थिति में उनके लिए बेहतर सुविधा होनी चाहिए। सीएम ने कहा है कि राहत कैंपों में लोगों के रहने और खाने की समुचित व्यवस्था करें। उनके विशेष ध्यान रखा जाए। सीएम ने इसके साथ कहा कि नालियों को साफ-सुथरा रखा जाए ताकि पानी जमा ना हो। सीएम ने यह भी निर्देश दिया है कि संवेदनशील जगहों के लिए जेसीबी की तैनाती रखें।

पीएम मोदी ने आपातकाल को लोकतंत्र के लिए काला दिन बताया

नई दिल्ली। 25 जून 1975 को आज के दिन पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के कथित इशारे पर तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने पूरे देश में आपातकाल लागू करने का ऐलान किया था। इस काले दिन को याद करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट करते हुए आपातकाल का विरोध करने वाले लोगों को श्रद्धांजलि दी। पीएम मोदी ने ट्वीट करते हुए लिखा कि मैं उन सभी साहसी लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने आपातकाल का विरोध किया और हमारी लोकतांत्रिक भावना को मजबूत करने के लिए काम किया। आपातकाल के काले दिन हमारे इतिहास में एक अविस्मरणीय अवधि हैं, जो हमारे संविधान द्वारा मनाए गए मूल्यों के बिल्कुल विपरीत हैं। गौरतलब है कि 25 जून 1975 को देश में आपातकाल लगाने की घोषणा की गई थी और उस समय इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं। आपातकाल को 21 मार्च 1977 को हटा लिया गया था। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने ट्वीट किया और लिखा, 25 जून 1975 को एक परिवार ने अपने तानाशाही प्रवृत्ति के कारण देश के महान लोकतंत्र की हत्या कर आपातकाल जैसा कलंक थोपा था। जिसकी निर्दयता ने सैकड़ों वर्षों के विदेशी शासन के अत्याचार को भी पीछे छोड़ दिया। ऐसे कठिन समय में असीम यातनाएं सहकर लोकतंत्र की स्थापना के लिए संघर्ष करने वाले सभी राष्ट्र भक्तों को नमन करता हूं।

दो मालगाड़ियों की टक्कर में 8 बोगियां पटरी से उतरी

कोलकाता। रविवार तड़के पश्चिम बंगाल के बांकुरा के पास दो मालगाड़ियां आपस में टकरा गईं, जिससे कई डिब्बे पटरी से उतर गए। मिली जानकारी के अनुसार ये घटना ओंडा स्टेशन पर हुई। बताया गया कि रविवार सुबह करीब 4 बजे बांकुरा के पास एक मालगाड़ी ने दूसरी को पीछे से टक्कर मार दी, जिससे मालगाड़ियों के 8 डिब्बे पटरी से उतर गए। ये घटना ओंडा स्टेशन पर हुई। शुक्र है कि हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ, हालांकि एक मालगाड़ी के ड्राइवर को मामूली चोटें आईं। इस घटना के बारे में दक्षिण पूर्व रेलवे के सीपीआरओ ने बताया कि ओंडाग्राम स्टेशन पर रेलवे मेंटेनेंस ट्रेन (बीआरएन) की शंटिंग चल रही थी। मालगाड़ी (बीसीएन) लाल सिग्नल

से आगे निकल गई और रुकी नहीं और बीआरएन मेंटेनेंस ट्रेन से टकराकर पटरी से उतर गई। करीब 4.05 बजे हुई घटना में 8 वैगन पटरी से उतर गए। हालांकि अप मेल लाइन और अप लूप लाइन पहले ही 7.45 बजे बहाल कर दी गई है। यहां सेक्शन पर रेल ट्रैफिक बहाल कर दिया गया है। वहां से पहली ट्रेन 8.35 बजे गुजरी है।

सूत्रों का कहना है ध्कि शुरुआती तौर पर यह दुर्घटना सिग्नलिंग से जुड़ी लग रही है। इसके कारण रूट का ट्रैफिक बाधित हो गया है। सिग्नल ओवरशूटिंग के चलते मालगाड़ी आगे चल रही एक दूसरी मालगाड़ी के पिछले हिस्से से टकरा गई।

दक्षिण पूर्व रेलवे ने कहा कि आज एडीआरए डिवीजन के ओंडाग्राम स्टेशन पर मालगाड़ी के पटरी से उतरने के कारण 14 ट्रेनें रद्द कर दी गईं, 3 का रूट बदला गया और 2 को कम समय के लिए निर्लंबित किया गया है। रेलवे अधिकारियों के मुताबिक 'दोनों खाली मालगाड़ियां थीं। दुर्घटना का कारण और दोनों ट्रेनें कैसे टकराईं, यह अभी भी साफ नहीं है।' इस दुर्घटना से रेलवे के एडीआरए डिवीजन में ट्रेन सेवाएं प्रभावित हुई हैं।

मुफ्त की रेवड़ियां भी बटेंगी

हरिशंकर व्यास

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव के समय विपक्षी पार्टियों की ओर से किए जाने वाले वादों को 'मुफ्त की रेवड़ी' कहा था। उन्होंने कई बार कहा कि इससे अर्थव्यवस्था चौपट हो जाएगी। हाल में कर्नाटक के चुनाव में उन्होंने कांग्रेस पर तंज करते हुए कहा था कि कर्नाटक का खजाना खाली हो जाएगा लेकिन कांग्रेस के वादे नहीं पूरे होंगे। लेकिन वहां भाजपा के बुरी तरह से हारने के बाद भाजपा भी इस तरह की योजनाओं की जरूरत महसूस करने लगी है। कर्नाटक में कांग्रेस ने महिलाओं को दो हजार रुपए महीना देने का वादा किया था, जिसका भाजपा ने विरोध किया था लेकिन वहां के नतीजों के बाद मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह सरकार ने लाड़ली बहन योजना के तहत महिलाओं को हर महीने एक हजार रुपए देने की योजना शुरू कर दी है।

वैसे केंद्र सरकार पहले से कई वस्तुएं और सेवाएं लोगों को मुफ्त में दे रही है और हिमाचल व कर्नाटक के चुनाव नतीजों के बाद इनमें इजाफा किया जा सकता है। केंद्र सरकार देश के 80 करोड़ से ज्यादा लोगों को मुफ्त अनाज की सुविधा दे रही है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना और खाद्य सुरक्षा कानून को मिला कर एक योजना बनाई गई है, जिसके तहत अगले साल के चुनाव के बाद तक लोगों को पांच किलो अनाज मुफ्त मिलता रहेगा। अभी से इसका प्रचार शुरू हो गया है। अखबारों में और सोशल मीडिया में विज्ञापन देकर बताया जा रहा है कि मोदी सरकार 80 करोड़ लोगों को पांच किलो अनाज दे रही है। हालांकि इसके बरक्स एक दूसरा नैरेटिव भी बनाया जा रहा है कि यह कोई गर्व की नहीं, बल्कि शर्म की बात है कि नौ साल के राज में गरीबी इतनी बढ़ी कि 80 करोड़ से ज्यादा लोगों को मुफ्त अनाज देने की जरूरत है। इस काउंटर नैरेटिव के बावजूद भाजपा इसका प्रचार करेगी क्योंकि सरकारी योजनाओं के लाभार्थी उसके बड़े वोटर हैं, जिनको नमकहलाल वोटर भी कहा जा सकता है।

इसी तरह केंद्र सरकार किसान सम्मान निधि का भी प्रचार करेगी। इस योजना के तहत किसानों को हर चार महीने पर दो हजार रुपए की किश्त जाती है। इस तरह एक साल में छह हजार रुपए किसानों को मिलते हैं। बताया जा रहा है कि इस साल चुनाव से पहले बजट सत्र में सरकार जब लेखानुदान पेश करेगी तब वह किसान सम्मान निधि में बढ़ोतरी कर सकती है। बताया जा रहा है कि छह हजार रुपए सालाना की रकम को बढ़ा कर आठ हजार रुपए किया जा सकता है। इसके अलावा सरकार प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घर बांट रही है और रोजगार मेला लगा कर नौकरियां बांटी जा रही हैं। सरकार ने ऐलान किया है कि इस साल दिसंबर तक 10 लाख नौकरियां दी जाएंगी। इस योजना के तहत लगभग हर महीने रोजगार मेला आयोजित किया जा रहा है, जिसे प्रधानमंत्री मोदी संबोधित करते हैं और 70-75 हजार युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए जा रहे हैं। भाजपा शासित राज्यों की सरकारों ने अपनी अपनी योजनाएं अलग चला रखी हैं, जिसके लाभार्थियों की संख्या करोड़ों में है।

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः।
उत द्विषो मर्त्यस्य॥
(ऋग्वेद ८-७१-१)

हे अग्रणी प्रभु ! आप अपनी महान शक्तियों द्वारा हमारी हर प्रकार से रक्षा करें। हमारे अंदर किसी के प्रति द्वेष की भावना ना हो, हमें भी ऐसी द्वेष की भावना से भी बचाओ।

O leading Lord ! You protect us in every way with your great powers. We should not have feelings of malice towards anyone; save us from such feelings of malice. (Rig Ved 8-71-1)

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

—प्रबंधक विज्ञापन

लोकसभा चुनाव की इस साल रिहर्सल!

अजीत द्विवेदी

इस साल के अंत में होने वाले पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव को राजनीतिक विश्लेषक अगले साल के लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल बता रहे हैं। एक तो यह सेमीफाइनल का जुमला राजनीति और चुनाव के संदर्भ में बंद होना चाहिए। राजनीति में सेमीफाइनल जैसी कोई चीज हो ही नहीं सकती है। खेलों में सेमीफाइल होते हैं, जिसमें हारने वाली टीम या खिलाड़ी बाहर हो जाते हैं। वे फाइनल नहीं खेल पाते हैं, जबकि राजनीति में ऐसा नहीं होता है। राजनीति में, जिसे सेमीफाइनल कहा जाता है, उसमें हारने वाला फाइनल भी खेलता है और कई बार जीत भी जाता है, जैसे पांच साल पहले उन्हीं राज्यों में हुआ था, जिन राज्यों में इस साल के अंत में चुनाव हैं। 2018 के विधानसभा चुनाव में तेलंगाना, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मिजोरम पांचों राज्यों में भाजपा बुरी तरह से हारी थी। लेकिन छह महीने के बाद ही लोकसभा चुनाव में उसने तेलंगाना में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में जीतने वाली कांग्रेस का सूपड़ा साफ कर दिया।

इसलिए नवंबर-दिसंबर में होने वाले पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव को सेमीफाइनल जैसा कुछ कहने या उस नजरिए से देखने की जरूरत नहीं है। इसकी बजाय इन चुनावों को अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव के रिहर्सल की तरह देख सकते हैं। जिस तरह 26 जनवरी को राजपथ पर होने वाली परेड की फुल ड्रेस रिहर्सल 23 जनवरी को होती है। उसी तरह अप्रैल-मई में होने वाले लोकसभा चुनाव की फुल ड्रेस रिहर्सल इस साल के अंत में पांच राज्यों में होगी। ये पांच राज्य मोटे तौर पर उत्तर-दक्षिण और पूरब-पश्चिम चारों दिशाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि इन राज्यों के चुनाव नतीजों से कुछ भी साबित नहीं होगा और न आगे का कोई संकेत मिलेगा। विधानसभा चुनावों के नतीजों से बिल्कुल उलट लोकसभा चुनाव का नतीजा हो सकता है। इसके बावजूद ये चुनाव इसलिए अहम हैं क्योंकि इसमें भाजपा और कांग्रेस दोनों के संगठन, चुनाव की तैयारियों, चुनावी मुद्दों आदि का पता चलेगा।

वैसे तो भाजपा और कांग्रेस के बीच अभी बहुत फासला है। कांग्रेस के 52 लोकसभा सांसदों के मुकाबले भाजपा के 303 सांसद हैं और कांग्रेस के चार मुख्यमंत्रियों के मुकाबले भाजपा के अपने 10 मुख्यमंत्री हैं और छह मुख्यमंत्री सहयोगी पार्टियों के हैं। इसके बावजूद कर्नाटक विधानसभा के चुनाव नतीजों ने संतुलन बना दिया है। पिछले छह-सात महीने में हुए विधानसभा चुनावों में भाजपा सिर्फ गुजरात में जीती, जबकि हिमाचल और कर्नाटक में कांग्रेस जीत गई। इसलिए कहा जा सकता है कि मोमेंटम कांग्रेस के साथ हो गया। भाजपा से कमजोर होने के बावजूद कांग्रेस ने अपने को बराबरी की लड़ाई में खड़ा कर लिया है। तभी भाजपा की कोशिश होगी कि लोकसभा चुनाव से पहले वह मोमेंटम अपनी तरफ शिफ्ट करे। इन चुनावों में के चंद्रशेखर राव की भारत राष्ट्र समिति और अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी की भविष्य की राजनीति की झलक भी मिलेगी। खासतौर से केजरीवाल की राजनीति दिलचस्प होगी क्योंकि वे कांग्रेस के असर वाले तीनों राज्यों- राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में पूरा जोर लगा कर लड़ेंगे ताकि कांग्रेस को कमजोर कर सकें और अपनी जगह बना सकें।

भाजपा का इन सभी राज्यों में बहुत मजबूत संगठन है और दूसरी ओर कर्नाटक की जीत के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं में भी जोश लौटा है। राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार है और मध्य प्रदेश में भी उसने मजबूती से चुनाव लड़ने के लिए संसाधन जुटाए हैं। चुनाव वाले सभी राज्यों में कांग्रेस के पास मजबूत नेता हैं। सो, कह सकते हैं कि नेतृत्व, संगठन और संसाधन इन तीनों पैमानों पर कांग्रेस कमजोर नहीं पड़ने वाली है। इस तरह कम से कम तीन राज्यों में दोनों पार्टियों के बीच बराबरी का मुकाबला होना है। जो बेहतर उम्मीदवार चुनेगा, बेहतर रणनीति बनाएगा, बेहतर प्रचार करेगा और बेहतर प्रबंधन करेगा वह जीतेगा और जो जीतेगा उसके साथ मोमेंटम होगा। चुनाव वाले पांच राज्यों में विधानसभा की 679 सीटें हैं और 83 लोकसभा सीटें इन राज्यों में आती हैं। इन 83 में से 65 सीटें भाजपा के पास हैं और राजस्थान में एक सीट उसकी सहयोगी पार्टी ने जीती थी। विधानसभा चुनाव में जीत हार से लोकसभा के नतीजे तय नहीं होंगे इसके बावजूद विधानसभा के नतीजे इसलिए अहम होंगे क्योंकि इनसे तय होगा कि लोकसभा चुनाव किस पार्टी को कैसे लड़ना है।

संगठन की ताकत, नेतृत्व और संसाधन के साथ साथ इन पांच राज्यों में चुनावी एजेंडे की परीक्षा होनी है। कांग्रेस और भाजपा ने कर्नाटक में जो दांव आजमाए थे वो अखिल भारतीय स्तर पर कितने कारगर हो सकते हैं, उसका पता इन चुनावों से चलेगा। भाजपा ने स्थानीय नेतृत्व को दरकिनार कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ा था और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण कराने का भरपूर प्रयास किया था। यानी मोदी का चेहरा और हिंदुत्व का मुद्दा। इस साल के राज्यों के चुनावों में भी भाजपा इसी रास्ते पर चलेगी। दूसरी ओर कांग्रेस ने कर्नाटक में स्थानीय चेहरों को आगे किया था, सामाजिक संतुलन बनाया था और धर्मनिरपेक्षता का रास्ता पकड़ा था। कांग्रेस ने खुल कर कहा था कि नफरत फैलाने वाले सभी संगठनों पर पाबंदी लगाएंगे चाहे वह पीएफआई हो या बजरंग दल हो। कांग्रेस ने दो टूक अंदाज में कहा था कि वह सत्ता में आई तो मुसलमानों को मिला चार फीसदी का आरक्षण बहाल करेगी। इसका नतीजा यह हुआ था कि जेडीएस को छोड़ कर मुस्लिम पूरी तरह से कांग्रेस के साथ एकजुट हुआ। भाजपा और कांग्रेस के बीच सात फीसदी वोट का अंतर यही से पैदा हुआ। कांग्रेस ने राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में धर्मनिरपेक्षता का कर्नाटक वाला रास्ता नहीं अपनाया है क्योंकि इन राज्यों में भाजपा और कांग्रेस का सीधा मुकाबला है। इन राज्यों में कोई तीसरी ताकत नहीं है, जिसकी ओर मुस्लिम वोट जाने का खतरा हो। इसलिए मुस्लिम को फॉर गारंटेड मान कर कांग्रेस नरम हिंदुत्व के रास्ते पर चल रही है। तेलंगाना में उसकी राजनीति कर्नाटक जैसी होगी।

राष्ट्रीय बनाम स्थानीय नेतृत्व और हिंदुत्व बनाम धर्मनिरपेक्षता के अलावा तीसरा मुद्दा 'मुफ्त की रेवड़ी' का है। इन राज्यों के चुनाव में इस मुद्दे की वोट जिताने की क्षमता की परीक्षा होनी है। कांग्रेस ने कर्नाटक की तर्ज पर चुनावी राज्यों में मुफ्त की चीजें और सेवाएं बांटने का ऐलान शुरू कर दिया है। राजस्थान में पांच सौ रुपए में रसोई गैस के सिलिंडर मिलने लगे हैं और हिमाचल की तरह मध्य प्रदेश में पुरानी पेंशन बहाल करने की घोषणा कांग्रेस ने कर दी है। भाजपा भी पीछे नहीं है लेकिन चूंकि प्रधानमंत्री मोदी ने मुफ्त की रेवड़ी को राज्य के लिए नुकसानदेह बताया है इसलिए भाजपा को यह काम ढके छिपे करना पड़ रहा है। अगर यह मुद्दा कांग्रेस को फायदा पहुंचाता है तो राष्ट्रीय चुनाव में भाजपा लोक लिहाज छोड़ कर इसी रास्ते पर लौटेगी।

कांग्रेस को राज्यों में प्रभारियों की जरूरत

कांग्रेस संगठन में बदलाव की शुरुआत हो गई है। पहला बदलाव गुजरात में हुआ है, जहां शक्ति सिंह गोहिल को अध्यक्ष बनाया गया है। उनके अलावा वर्षा गायकवाड को मुंबई क्षेत्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया है। पुडुचेरी में भी कांग्रेस ने नया अध्यक्ष बनाया है। कहा जा रहा है कि नए अध्यक्षों की नियुक्ति के साथ ही केंद्रीय पदाधिकारियों की नियुक्ति होगी और राज्यों में नए प्रभारी बनाए जाएंगे। कांग्रेस अध्यक्ष ने शक्ति सिंह गोहिल की जगह गुजरात के ही नेता दीपक बाबरिया को दिल्ली और हरियाणा का प्रभारी बनाया गया है लेकिन बताया जा रहा है कि यह भी अस्थायी व्यवस्था है। केंद्रीय पदाधिकारियों की नियुक्ति के बाद ही स्थायी रूप से राज्यों का प्रभार बंटेगा।

इस बीच कई राज्यों में अलग अलग कारणों से कांग्रेस को प्रभारियों की जरूरत है। कांग्रेस में एक व्यक्ति, एक पद का सिद्धांत है। इसके तहत दो राज्यों में तत्काल प्रभारी नियुक्त करने की जरूरत है। तमिलनाडु के कांग्रेस प्रभारी दिनेश गुंडुराव और महाराष्ट्र के प्रभारी एचके पाटिल दोनों कर्नाटक की नई सरकार में मंत्री बन गए हैं। उनकी जगह दोनों अहम राज्यों में प्रभारी नियुक्त किया जाना है। इसी तरह पिछले साल गुजरात में कांग्रेस के बुरी तरह से हारने के बाद प्रभारी रघु शर्मा ने पद छोड़ने की पेशकश की थी। वहां भी नया प्रभारी नियुक्त होना है। अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव की तैयारियों के लिए कांग्रेस को बिहार, झारखंड सहित कई राज्यों में ऐसे प्रभारी नियुक्त करने हैं, जो तालमेल की बात बेहतर तरीके से करके गठबंधन में कांग्रेस के लिए अच्छी डील हासिल कर सकें। उत्तर प्रदेश में भी कांग्रेस को ऐसा प्रभारी नियुक्त करना है, जो कांग्रेस के पुराने वोट बैंक को वापस लाने में मददगार हो।

बैंक में बंधक सम्पत्ति बेचकर लाखों की धोखाधडी में दम्पत्ति समेत 3 आरोपित नामजद

संवाददाता

देहरादून। बैंक में बंधक सम्पत्ति को बेच कर लाखों रुपये की धोखाधड़ी करने के मामले में पुलिस ने दम्पति सहित तीन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है । प्राप्त जानकारी के अनुसार मौजा चिरोंवाली के रहने वाले कर्नल मधुसूदन हाजरा ने रायपुर पुलिस को शिकायत दी है। कर्नल हाजरा ने पुलिस को बताया कि डिस्पेंसरी रोड के रहने वाले संजय मित्तल, उसकी पत्नी छाया मित्तल और वृंदावन लैंड मार्क प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर राजकुमार शर्मा निवासी गंगोत्री विहार ने उनसे मौजा चीडोवाली में कुछ फ्लैट का सौदा किया । आरोपितों ने बताया कि फ्लैट में किसी प्रकार का लोन आदि नहीं है। आरोपितो पर विश्वास करते हुए उन्होंने व उनके परिचितों ने कुछ फ्लैट का सौदा आरोपितो से कर लिया। जिसके लिए लाखों रुपए की रकम अदा की गई । बाद में पता चला कि जिन फ्लैट का सौदा किया गया है सभी फ्लैट बैंक में बंधक हैं। पीड़ितों की शिकायत पर रायपुर पुलिस ने दंपति समेत तीनों आरोपितों को नामजद करते हुए संबंधित धारा में मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने पर केस दर्ज

संवाददाता

देहरादून । शादी का झांसा देकर युवती के साथ दुष्कर्म करने के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर जांच शुरू कर दी है ।

प्राप्त जानकारी के अनुसार कैंट थाना क्षेत्र के सैयद मौहल्ला की रहने वाली युवती ने कोतवाली पुलिस को शिकायत दी है। युवती ने पुलिस को बताया कि उसकी जान-पहचान बड़कोट उत्तरकाशी के रहने वाले माधव पंडित से हुई। माध व पंडित ने उसे प्यार और शादी का झांसा दिया। शादी का झांसा देकर आरोपित एक रोज उसे प्रिंस चौक स्थित एक होटल में ले गया । यहां आरोपित ने उससे दुराचार किया।

ऑनलाइन खरीदारी में गंवाये पांच हजार रुपये

संवाददाता

देहरादून। ऑनलाइन खरीदारी करने के नाम पर पांच हजार रूपये गंवाने के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार हरिपुर कलां निवासी अनुपम अग्रवाल ने रायवाला थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसने 15 मई 23 को एक आँनलाइन आईटम खरीदे थे। फिर उसे इस आइटम कि कोई प्रतिक्रिया नही मिली तो उसने 16 मई 23 को इसके कस्मटर केयर के नंबर को ढूँढ कर उस नंबर पर काल किया, तब उन्होने कहा कि 21 घंटे के अंदर आप के पैसे वापस हो जायेंगे। फिर 17 मई 23 को सुबह नौ बजे पर काल आई और बोले कि उनके रुपये 21घंटे मे वापस नही हो सकते इसलिए अभी लाइन पर बने रहे ,वह अभी रुपये ट्रांसफर कर रहे है। फिर बोले वह अपना इमेल खोल कर चेक करें कोई इमेल आया होगा, फिर तुरंत कॉल कट कर दिया। तुरंत उसे मैसेज आया कि 5000 रूपये उसके खाते से निकल गये है। जिसके बाद उसको पता चला कि उसके साथ साइबर ठगी हो गयी है।

दो दुपहिया वाहन चोरी

संवाददाता

देहरादून। चोरों ने खुले स्थान से दो दुपहिया वाहन चोरी कर लिये हैं। पुलिस ने मुकदमें दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार सरस्वती विहार निवासी महीचरण उनियाल ने नेहरू कालोनी थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि वह सरस्वती विहार में अपनी बहन के घर पर आया था तथा उसने अपनी स्कूटी घर के बाहर खडी कर दी थी। लेकिन जब वह थोडी देर बाद वापस आया तो उसने देखा कि उसकी स्कूटी अपने स्थान से गायब थी। वहीं महबूब कालोनी निवासी शहजाद ने पटेलनगर कोतवाली में अपने घर के बाहर से उसकी मोटरसाईकिल चोरी होने का मुकदमा दर्ज कराया।

शराब के साथ दो गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। पुलिस ने शराब के साथ दो लोगों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सहसपुर थाना पुलिस ने लांघा रोड तिराहे के पास दो युवकों को संदिग्ध अवस्था में घुमते हुए देखा तो उनको रूकने का इशारा किया। पुलिस को देख वह भाग खडे हुए। पुलिस ने पीछा कर उनको थोडी दूरी पर ही दबोच लिया। तलाशी लेने पर पुलिस ने दोनों के कब्जे से 132 पव्वे शराब के बरामद कर लिये। पूछताछ में उन्होंने अपने नाम हरेन्द्र पुत्र तुम्मन सिंह व कर्ण पुत्र नाथी राम निवासी कोटडा कल्याणपुर बताया। पुलिस ने दोनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

महिलाओं के चेहरे पर बाल आना, जानें इसका कारण और बचने के उपाय

पुरुषों की ही तरह महिलाओं में भी चेहरे पर बाल (फेशियल हेयर) होना सामान्य सी बात है, क्योंकि हमारे शरीर की त्वचा पर सभी जगह हेयर फॉलिकल्स होते हैं. हालांकि सभी महिलाओं के शरीर में बालों का विकास अलग-अलग तरीके से होता है. कुछ महिलाओं में जहां चेहरे पर बेहद पतले, बारीक और छिटपुट बाल होते हैं, वहीं दूसरी महिलाओं में बालों का विकास बेहद घना हो सकता है. बालों के विकास का पैटर्न आपके पारिवारिक इतिहास पर भी काफी हद तक निर्भर करता है. कई बार किसी बीमारी की वजह से भी महिलाओं के चेहरे पर ज्यादा बाल उगने लगते हैं.

महिलाओं के चेहरे और शरीर के दूसरे अंगों पर अत्यधिक बालों के उगने की इस समस्या को मेडिकल टर्म में हिर्सुटिज्म कहते हैं. प्रजनन के उम्र वाली दुनियाभर की करीब 5 से 1० प्रतिशत महिलाओं में हिर्सुटिज्म की समस्या देखने को मिलती है. आमतौर पर महिलाओं के शरीर में उगने वाले बालों की बनावट बेहद बारीक होती है और उनका रंग भी हल्का रहता है. हालांकि वैसी महिलाएं जो हिर्सुटिज्म की समस्या से ग्रसित हों उनके शरीर में मौजूद बाल बेहद घने, मोटे और गहरे रंग के होते हैं. ये बाल महिलाओं की ठुड्डी पर, साइडबर्न्स यानी कलम की जगह पर, छाती पर, पेट पर, पीठ पर, जांघ के अंदरूनी हिस्सों में हो सकते हैं.

चेहरे पर ज्यादा बाल आने का कारण

वैसे तो महिलाओं में जींस की वजह से चेहरे और शरीर पर ज्यादा बाल उगने लगते हैं, लेकिन कई बार इसके पीछे कोई बीमारी भी जिम्मेदार हो सकती है:

पीसीओएस: महिलाओं के चेहरे पर ज्यादा बाल होने के ज्यादातर मामलों में पीसीओएस या पीसीओडी बीमारी मुख्य कारण होती है. इस बीमारी में शरीर में सेक्स हार्मोन्स का संतुलन बिगड़ने लगता है जिससे चेहरे पर अनचाहे और अतिरिक्त बाल उगने लगते हैं.

एन्जाइम की कमी: महिलाओं के शरीर में एन्जाइम की कमी की वजह मेल हार्मोन टेस्टोस्टेरॉन की शरीर में अधिकता होने लगती है जिस कारण चेहरे और शरीर पर हद से ज्यादा बाल उगने की समस्या होने लगती है.

हाइपरट्राइकोसिस: इसे वेयरवोल्फ सिंड्रोम भी कहते हैं और यह कई बीमारियों की वजह से भी हो सकता है, जैसे- हाइपोथायराइडिज्म, ऐक्रोमेगाली (शरीर में ग्रोथ हार्मोन की अधिकता), कुपोषण और एचआईवी. हाइपरट्रिकोसिस की वजह से नाक के टिप और कान के पास ज्यादा बाल उगने लगते हैं.

कशिंग्स सिंड्रोम: यह एक चिकित्सीय स्थिति है जिसमें ऐड्रिनल ग्लैंड में गड़बड़ी की वजह से शरीर में कोर्टिसोल जिसे स्ट्रेस हार्मोन भी कहते हैं ज्यादा बनने लगता है. कशिंग्स सिंड्रोम से पीड़ित महिला में हद से ज्यादा बालों के विकास के अलावा बहुत ज्यादा वजन बढ़ना, हाई बीपी और चिड़चिड़ापन भी देखने को मिलता है.

दवाइयां: कई बार कुछ दवाइयों की वजह से भी महिलाओं के शरीर में अनचाहे बालों का विकास होने लगता है. हार्मोनल थेरेपी और एन्डोमेट्रिओसिस के इलाज में इस्तेमाल होने वाली दवाइयां और मल्टीपल इन्फ्लेमेशन के इलाज में इस्तेमाल होने वाले ग्लूकोकोर्टिकोयड्स की वजह से भी महिलाओं के शरीर में बालों का असामान्य विकास होने लगता है.

2. चेहरे के अनचाहे बाल हटाने के टिप्स

जो महिलाएं चेहरे पर मौजूद अनचाहे बालों से छुटकारा पाना चाहती हैं वे हेयर रिमूवल का इनमें से कोई भी तरीका इस्तेमाल कर सकती हैं:

प्लकिंग: प्लकर की मदद से आइब्रो, अपर लिप और ठुड्डी के पास के अतिरिक्त बालों को हटाया जा सकता है, लेकिन अगर चेहरे पर बालों की ग्रोथ ज्यादा हो तो उसमें यह तरीका कारगर साबित नहीं होगा.

शेविंग: चेहरे के अनचाहे बालों को हटाने के लिए आप रेजर का इस्तेमाल भी कर सकती हैं. शेविंग हो जाने के बाद उस हिस्से को पानी से साफ कर मॉइश्चराइजर लगा लें.

क्रीम: डेपिलेटरी क्रीम इस्तेमाल कर अनचाहे बाल हटाने का तरीका दर्द रहित है. क्रीम को बाल हटाने वाली जगह पर लगाएं, स्पैट्यूला से फैलाएं, 5-1० मिनट के लिए लगा रहने दें और फिर स्पैट्यूला की मदद से क्रीम के साथ-साथ बालों को भी हटा दें.(आरएनएस)

वैक्सिंग: आप चाहें तो घर पर ही वैक्सिंग की मदद से भी चेहरे के अनचाहे बाल हटा सकती हैं. इसके लिए गर्म वैक्स की जगह वैक्सिंग स्ट्रिप का इस्तेमाल कर सकती हैं.

थ्रेडिंग: एक खास तरह के कॉटन धागे की मदद से अनचाहे बालों को एक-एक कर प्लकिंग के जरिए हटाया जाता है. आप चाहें तो पार्लर या सलॉन में जाकर थ्रेडिंग के जरिए अनचाहे बालों को हटवा सकती हैं.

एपिलेटर्स: यह जड़ों से अनचाहे बालों को खींचकर निकालता है. इसे इस्तेमाल करने के दौरान काफी दर्द होता है.

लेजर ट्रीटमेंट: इस दौरान डॉक्टर लेजर लाइट की मदद से हेयर फॉलिकल्स को डैमेज करते हैं. ऐसा करने से बालों की ग्रोथ कम हो जाती है.

इलेक्ट्रोलाइसिस: इसमें डॉक्टर हेयर फॉलिकल्स के बीच से बिजली के करेंट को दौड़ाते हैं जिससे बालों को नुकसान पहुंचता है और वे दोबारा उग नहीं पाते.

बड़े होने का मतलब

चंद्रमौलेश्वर प्रसाद

सदियों पहले कबीरदास का कहा दोहा आज सुबह से मेरे मस्तिष्क में घूम रहा था तो सोचा कि इसे ही लेखन का विषय क्यों न बनाया जाए। कबीर का वह दोहा था- बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर, पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर। यह सही है कि बड़ा होने का मतलब होता है नम्र और विनय से भरा व्यक्ति, जो उस पेड़ की तरह होता है जिस पर फल लदे हैं जिसके कारण वह झुक गया है।

बड़ा होना भी तीन प्रकार का होता है। एक बड़ा तो वह जो जन्म से होता है, दूसरा अपनी मेहनत से बड़ा बनता है और तीसरा वह जिस पर बड़प्पन लाद दिया जाता है। अपने परिवार में मैं तो सब से छोटा हूं। बड़े भाई तो बड़े होते ही हैं। बड़े होने के नाते उन पर परिवार की सारी ज़िम्मेदारियां भी थीं। छोटों को तो बड़ों की बात सुनना, मानना हमारे संस्कार का हिस्सा भी है और छोटे तो आज्ञा का पालन करने लिए होते ही हैं। परिवार में बड़े होने के नुकसान भी हैं जैसे घर-परिवार की चिंता करो, खुद न खाकर भी परिवार का पोषण करो आदि।

दूसरी श्रेणी के बड़े वे होते हैं जो अपने परिश्रम से बड़े बन जाते हैं। एक गरीब परिवार में पैदा होकर अपने परिश्रम से सम्पन्न होने और बुद्धि-कौशल से समाज में ऊंचा स्थान पाने वाले लोगों के कई किस्से मशहूर हैं ही। ऐसे लोगों को ईश्वर का विशेष आशीर्वाद होता है और उनके हाथ में 'मिडास टच' होता है। वे मिट्टी को छू लें तो सोना बन जाए! ऐसे बड़ों में भी दो प्रकार की प्रवृत्ति देखी जा सकती हैं। कुछ बड़े लोग अपने अतीत को नहीं भूलते और विनम्र होते हैं। उनमें अभिमान नाममात्र को नहीं होता। इसलिए समाज में उनका सच्चे मन से सभी सम्मान करते हैं।

दूसरी प्रवृत्ति के बड़े लोग वे होते हैं जो शिखर पर चढ़ने के बाद अपनों से आंख फेर लेते हैं। दुर्भाग्य से जीवन में वे गिर पड़े तो उनको कोई साथी नहीं दिखाई देगा। सभी उस पेड़ के परिंदों की तरह उड़ जाएंगे जो सूख गया है। तीसरी श्रेणी के बड़े वे होते हैं जिन पर बड़प्पन लाद दिया जाता है। इस श्रेणी में धनवान भी हो सकते हैं या गुणवान भी हो सकते हैं या फिर मेरी तरह के औसत मध्यवर्गीय भी हो सकते हैं, जिन्हें कभी-कभी समय एक ऐसे मुकाम पर ला खड़ा कर देता है जब वे अपने पर बड़प्पन लदने का भार महसूस करते हैं।

मणिपुर की चिंता करनी चाहिए

अजीत द्विवेदी

पूर्वोत्तर के राज्यों की खबरें राष्ट्रीय मीडिया में तभी आती हैं, जब वहां कोई हिंसा होती है, अलगाववादी आंदोलन जोर पकड़ता है या चुनाव होते हैं। इसके अलावा मुख्यधारा का मीडिया पूर्वोत्तर के घटनाक्रम से तटस्थ बना रहता है। पिछले एक महीने में कई बार मणिपुर मुख्यधारा की राष्ट्रीय मीडिया में सुर्खियों में रहा तो उसका कारण यह था कि वहां हिंसा भड़की थी। कुकी और मैती समुदाय के बीच जातीय हिंसा चल रही है, जिसमें अब तक एक सौ से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। यह हैरान करने वाली बात है कि तीन मई को हिंसा भड़कने के बाद कई दिन तक दिल्ली खबर नहीं पहुंची थी कि वहां क्या हो रहा है। उस दिन से राज्य में इंटरनेट की सेवा बंद हुई। इस तरह से इंटरनेट बंद किए जाने के खिलाफ दो लोग सुप्रीम कोर्ट पहुंचे थे लेकिन सर्वोच्च अदालत ने भी उनकी याचिका पर जल्दी सुनवाई से इनकार कर दिया।

मणिपुर हिंसा कैसे शुरू हुई, किस तरह से उसका फैलाव पूरे प्रदेश में हो गया, कैसे इतने लंबे समय तक हिंसा चलती रही और इस दौरान कितनी बर्बरता हुई, इसकी कहानियां बेहद परेशान करने वाली हैं। हाल के दिनों में किसी भी राजनीतिक या सामाजिक आंदोलन में ऐसी बर्बरता नहीं देखने को मिली, जैसी मणिपुर में मिली है। एक सात साल के बच्चे तोंसिंग हैंगिंग की बर्बर हत्या किसी भी संवेदनशील इंसान को विचलित कर सकती है। तोंसिंग को सिर में गोली लगी थी और उसे एंबुलेंस से अस्पताल ले जाया जा रहा था। एक भीड़ ने एंबुलेंस को रोक कर उसमें आग लगा दी, जिसमें सात साल के तोंसिंग, उसकी मां और एक अन्य रिश्तेदार की मौत हो गई। सोचें, किसी भी सभ्य समाज में ऐसी अमानवीय और वीभत्स घटना की कल्पना की जा सकती है? घरों में आग लगाने की कई और घटनाएं हुईं।

हिंसा की शुरुआत हाईकोर्ट के एक आदेश से हुई, जिसमें अदालत ने राज्य के बहुसंख्यक मैती समुदाय को एसटी का दर्जा देने के प्रस्ताव पर विचार करने को कहा। कुकी समुदाय ने इसका विरोध किया और अदालत के फैसले के खिलाफ आदिवासी एकजुटता मोर्चा की एक रैली निकाली। तीन मई को निकाली गई रैली से टकराव शुरू हुआ, जिसमें भयंकर हिंसा का रूप ले लिया। पहले दो दिन की हिंसा में 54 लोग मारे गए। उसके बाद आनन-फानन में सेना तैनात की गई और अर्धसैनिक बलों को नियुक्त किया गया। अब सवाल है कि क्या इतने बड़े पैमाने पर हुई हिंसा स्वंयस्फूर्त थी? अभी तक ऐसा ही माना जा रहा है लेकिन असल में ऐसा नहीं है। राज्य के दोनों मुख्य जातीय समूहों कुकी और मैती के बीच जातीय टकराव का पुराना इतिहास रहा है। दोनों समुदाय एक-दूसरे पर अविश्वास करते हैं। कुकी इस बात से परेशान रहते हैं कि मैती समुदाय को राजनीतिक रूप से ज्यादा महत्व मिलता है क्योंकि उनके चुने हुए प्रतिनिधियों की संख्या ज्यादा होती है। दोनों समुदाय हमेशा लड़ने के लिए तैयार रहते हैं। हाईकोर्ट के फैसले ने दोनों समुदायों के बीच की फॉल्टलाइन जाहिर हुई और बरसों से दबा आक्रोश बाहर आ गया। पूरे राज्य में हिंसा फैल गई।

पूरा राज्य किस तरह से कुकी और मैती में बंटा है, वह कई तरह से दिखा। कुकी समुदाय के विधायक तक राजधानी इंफाल छोड़ कर पहाड़ों में चले गए। उन्होंने केंद्र सरकार के सामने मणिपुर से अलग होने की मांग रखी। एक महीने से ज्यादा समय से चल रही हिंसा के बीच अब राज्य में कोई मणिपुरी नहीं है या भारतीय नहीं है। कोई पुलिसवाला, कोई अधिकारी या कोई कारोबारी नहीं है। सब कुकी हैं या मैती हैं। पुलिस और सुरक्षा बलों में भी यह विभाजन है। सरकारी कर्मचारियों में भी ऐसा विभाजन है। एक हैरान करने वाली बात यह है कि एक महीने की हिंसा में सुरक्षाकर्मियों से तीन हजार हथियार छीन लिए गए। क्या हथियारबंद और प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मी से हथियार छीन लेना इतना आसान होता है? अब पूरे राज्य में सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है ताकि हथियार वापस हासिल किए जा सकें। कहीं कहीं से कुछ हथियार बरामद हुए हैं लेकिन ज्यादातर हथियार अब भी उपद्रवियों के पास हैं और यह एक बड़ा कारण है, जिससे हिंसा नहीं थम रही है। पहाड़ों, जंगलों में हथियारबंद उपद्रवी हैं और 5० हजार से ज्यादा लोग राहत शिविरों में हैं!

सोचें, मणिपुर में छह साल से ज्यादा समय से 'डबल इंजन' की सरकार है, जिसका दावा है कि उसने पूर्वोत्तर को मुख्यधारा से जोड़ा है और हिंसा समाप्त की है। इस दावे की हकीकत मणिपुर में दिख रही है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह चार दिन तक मणिपुर में रहे और बाद में असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा को शांति बहाली के उपाय खोजने इंफाल भेजा गया। परंतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस पूरे घटनाक्रम पर चुप्पी साधी हुई है। उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा है। न तो हिंसा में उलझे समुदायों से कोई अपील की है और न अपनी तरफ से अलग अलग समुदायों के बीच का अविश्वास दूर करने और राजनीतिक-सामाजिक समाधान की पहल की है। एक चिंता की बात यह भी है कि सरकार इसे कानून व्यवस्था की समस्या मान कर सुलझाने की पहल कर रही है, जबकि यह एक राजनीतिक व सामाजिक समस्या है, जिसकी जड़ें बहुत गहरी हैं।

भले मैती आरक्षण के बहाने इस हिंसा की शुरुआत हुई है क्योंकि जो वर्ग पहले से लाभार्थी है उसे अपनी श्रेणी में दूसरे समुदाय का शामिल होना कबूल नहीं है। लेकिन यह मामला इतना भर नहीं है। यह जमीन का मामला है, पहाड़ और जंगल का मामला है, पहाड़ और घाटी का मामला है, प्राकृतिक संसाधनों से लेकर प्रशासन को नियंत्रित करने का मामला है, कारोबार पर कब्जे का मामला है, राजनीतिक वर्चस्व का मामला है, कुकी व मैती के साथ साथ नगा हितों का भी मामला है, जिसे सिर्फ सुरक्षा बलों के सहारे नहीं ठीक किया जा सकता है। इसके लिए राज्य और केंद्र दोनों सरकारों की ओर से संवेदनशीलता दिखाने की जरूरत है।

गर्मियों में करना चाहिए हरे अंगूर का सेवन

अंगूर एक ऐसा फल है जो आपको सभी मौसम में बड़ी आसानी से मिल जाता है। विशेष तौर पर देखा जाए तो यह गर्मियों में आपको हर फरूट मार्केट में बहुत ही सस्ते दाम में मिल जाएगा। इसका सेवन करने वाले लोगों की संख्या बहुत ज्यादा है लेकिन आज हम आपको गर्मियों में अंगूर खाने से होने वाले कुछ ऐसे फायदे के बारे में बताएंगे जो आपको सेहतमंद बनाए रखने के लिए बहुत मददगार साबित होंगे। आप चाहें तो अंगूर को खाने की बजाय इसका जूस बनाकर भी पी सकते हैं। आइए इसके बारे में विस्तार पूर्वक जानते हैं।

विटामिन-सी की मिलेगी भरपूर मात्रा

विटामिन-सी एक ऐसा पोषक तत्व होता है जिसकी नियमित रूप से हमारे शरीर को जरूरत पड़ती है। एंटीऑक्सीडेंट के रूप में यह हमारी त्वचा को निखारने और स्किन टाइटनिंग में भी बेहतरीन असर दिखाता है। इसलिए अंगूर का नियमित रूप से सेवन आपके शरीर को पर्याप्त मात्रा में विटामिन-सी की पूर्ति कर सकता है।

एंटी कैंसर गुण

कैंसर जैसी गंभीर बीमारी की चपेट में आने से हर कोई बचे रहना चाहता है। इसलिए खान-पान पर विशेष ध्यान देना बहुत जरूरी है। गर्मियों में अंगूर का सेवन कैंसर की चपेट में आने से आपको बचाए रख सकता है। इसमें कई प्रकार के ऐसे कंपाउंड पाए जाते हैं जो एंटी कैंसर गुण रखते हैं। इस कारण अंगूर का सेवन करने से हमारे शरीर को कई प्रकार के कैंसर से बचे रहने में मदद मिल सकती है।

ब्लड प्रेशर को करता है कम

हाइपरटेंशन के कारण पूरी दुनिया में हर साल लाखों लोगों की जान जाती है। हाइपरटेंशन के कारण लोगों को ह्रदय से जुड़ी कई प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं। इन सब की समस्या से बचे रहने के लिए अंगूर बेहतरीन भूमिका निभा सकता है। इसमें पोटेशियम की मात्रा पाई जाती है जो ब्लड प्रेशर को कम करने का दूर रखता है।

डायबिटीज से बचाए रखे

डायबिटीज से बचे रहने में भी अंगूर का सेवन करना काफी फायदेमंद साबित होगा। अंगूर खाने से शरीर में ब्लड शुगर लेवल का स्तर काफी कम होता है। इसके साथ ही साथ यह फल शरीर में ब्लड शुगर लेवल को मेंटेन करता है, जिसके कारण आप डायबिटीज की चपेट में आने से बचे रह सकते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन में भी इस बात की पुष्टि हो चुकी है कि अंगूर डायबिटीज के खतरे को कई गुना तक कम कर सकता है।

आंखों की रोशनी बढ़ाए

आंखों की देखने की क्षमता अगर मेंटेन बनी रहेगी तो लंबे समय तक चश्मा नहीं लगेगा। इसके लिए सबसे जरूरी है कि आप अपने खान-पान पर विशेष ध्यान दें और विटामिन-ए युक्त खाद्य पदार्थों को अपने खाने में अवश्य शामिल करें। अंगूर में एक विशेष प्रकार का केमिकल पाया जाता है जो आंखों के स्वास्थ्य के लिए और देखने की क्षमता को मजबूत बनाए रखने के लिए प्रभावी रूप से कार्य कर सकता है। इसलिए अंगूर का सेवन आपके आंखों के लिए भी फायदेमंद रहेगा।

स्वयं से प्रतिस्पर्धा

एक युवक ने एक संत से पूछा कि बिना स्पर्धा के जीवन में उच्च सफलता प्राप्त की जा सकती है संत ने गंभीर होकर कहा 'दौड़, सारी प्रतिस्पर्धा दूसरों को पछाड़ने की है, कि कैसे दूसरे को गिराकर उससे आगे निकले। सारी शिक्षा-दीक्षा इसी पर टिकी है। शिक्षा की, समाज की, सारे संस्कारों की सिखावन बस मात्र यही है कि कैसे दूसरे को पछाड़ कर उससे आगे निकला जाये। इसीलिए ये सारी सिखावन, सारी शिक्षा-दीक्षा, समाज के सारे संस्कार कभी कोई अच्छा इनसान नहीं बना पाते।

जहां दृष्टि ही दूसरे को पछाड़ने की है, वहां कोई अच्छा इनसान बन कैसे सकता है जब तक दृष्टि दूसरे पर है, स्वयं पर नहीं, तब तक कोई रूपांतरण सम्भव नहीं है। दृष्टि स्वयं पर होनी चाहिए, प्रतिस्पर्धा स्वयं से ही होनी चाहिए, दूसरों से नहीं, तो ही रूपान्तरण सम्भव है, तो ही कोई अच्छा इनसान बन सकता है।

प्रस्तुति: सुभाष बुड़ावनवाला

शब्द सामर्थ्य -058

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. बात, घटना, माजरा, मुकदमा (उर्दू) 3. अलावा, अतिरिक्त 6. प्रेम, इच्छा 7. मां का बच्चे के प्रति प्रेम 8. गलती, जुर्म, गुनाह, दोष 10. मग्न, लीन, खुश, प्रसन्न 12. धनुष, समादेश, फौजी टुकड़ी 13. एक कल्पित पत्थर जो लोहे को छूकर सोना बना देता है 16. हिम्मत, साहस, सामर्थ्य 17. बनावटी, अनुकृति, असली का विलोम 18. अबोध, नासमझ 20. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध हरिभक्त देवर्षि 22. गहरा नीला, काला 23. व्याकुल, बेसब्र 24. मन, चित्त, आदरसूचक तथा सहमति सूचक एक शब्द।

ऊपर से नीचे

1. स्वामी, नाथ 2. बेबस, मजबूर, विवश 3. अन्याय, अत्याचार, जुल्म 4. मध्य एशिया का एक देश 5. पुस्तक 9. बहादुर, वीर 11. सैनिक विद्रोह 12. नीच, अधम 12 ए. प्रणाम, झुकना 13. भरण-पोषण करना, परवरिश करना, छोटा झूला, हिंडोला 14. प्रमाण, प्रमाणिक कथन 15. स्वाभाविक ढंक, योग्यता, लियाकत, सभ्यता और शिष्टता, शऊर (उ.) 19. बिजली, तड़ित 21. रात में दिखाई न पड़ने का नेत्र संबंधी रोग।

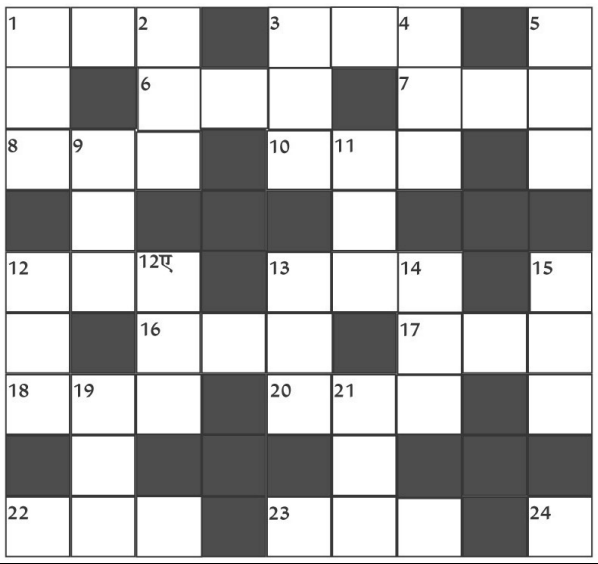

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 57 का हल

प	सं	द	■	सिं	हा	स	न	■
ख	■	म	ज	दू	र	■	का	म
वा	द	क	■	र	■	सं	ब	ल
ड़	■	ल	ज्जा	■	म	स्का	■	य
■	बा	■	■	बि	हा	र	■	■
सु	धा	क	र	■	न	■	■	औ
रं	■	म	■	कि	ता	ब	■	स
ग	■	अ	र	सा	■	हु	ज्ज	त
■	श	क्ल	■	न	मि	त	■	न

डीपनेक ब्लाउज पहन निक्की तंबोली ने गिराई हुस्न की बिजलियां

बिग बॉस फेम निक्की तंबोली आए दिन अपने बोल्ड अंदाज से सोशल मीडिया पर लाइमलाइट बटौरती रहती हैं। एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी फोटोज पर लाइक्स और कॉमेंट्स के जरिए जमकर अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएं देते हैं। हाल ही में निक्की ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरों से सोशल मीडिया का पारा हाई कर दिया है। एक्ट्रेस निक्की तंबोली एक बार फिर से अपने हॉट और बोल्ड लुक्स के कारण सोशल मीडिया पर चर्चाओं का विषय बन गई हैं। वो हर बार अपने लुक्स से इंटरनेट पर खलबली मचाती रहती हैं। निक्की का हर एक अंदाज फैंस के बीच ट्रेंड करता है। हाल ही में एक्ट्रेस ने

अपने लेटेस्ट फोटोशूट के दौरान की कुछ ग्लैमरस तस्वीरें इंस्टा पर पोस्ट की हैं। इन तस्वीरों में अभिनेत्री निक्की ने स्टाइलिश लहंगा और डीपनेक टॉप लुक में ब्लाउज पहना हुआ है। अभिनेत्री अपनी इन तस्वीरों में एक से बढ़कर एक कातिलाना अंदाज में जबरदस्त पोज देती हुई नजर आ रही हैं। हालांकि निक्की की इन तस्वीरों पर फैंस के भी कॉमेंट्स के जरिए काफी अच्छे रिस्पॉन्स देखने को मिल रहे हैं। एक यूजर ने निक्की तंबोली की फोटोज पर कॉमेंट करते हुए लिखा है- हॉट, तो वहीं दूसरे यूजर ने लिखा है- सो ब्यूटीफुल। बताते चलें कि ओपन हेयर, मिनिमल मेकअप और न्यूड लिप्सटिक लगाकर एक्ट्रेस निक्की तंबोली ने अपन आउटलुक कंप्लीट किया है।

अंशुमन झा की फिल्म लकड़बग्घा ओटीटी रिलीज के लिए तैयार

बॉलीवुड अभिनेता अंशुमन झा की लकड़बग्घा 13 जनवरी, 2023 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी, लेकिन यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी। इसमें रिद्धि डोगरा और मिलिंद सोमन मुख्य भूमिकाओं में थे। अब लकड़बग्घा अपनी ओटीटी रिलीज के लिए तैयार है। ऐसे में जो दर्शक इस फिल्म सिनेमाघरों में नहीं देख पाए अब वो इसे घर बैठे आराम से देख सकते हैं। लकड़बग्घा का प्रीमियर 30 जून को ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर किया जाएगा।

लकड़बग्घा में अंशुमन ने अर्जुन बख्शी नाम के एक पशु प्रेमी का किरदार निभाया था, जो बचपन से अपने पिता (मिलिंद) से बेजुबान और बेसहारा जानवरों के लिए लड़ना सीखता है। फिल्म जानवरों की दुर्दशा पर आधारित है। इसका निर्देशन विक्टर मुखर्जी ने किया है। अंशुमन हम भी अकेले तुम भी अकेले और लव सेक्स और धोखा जैसी फिल्मों के लिए जाने-जाते हैं। अंशुमन ने हाल ही में दूसरी बार अपनी पत्नी सिएरा विंटर्स के साथ सात फेरे लिए हैं।

अनुराग बासु के सेट पर खाना अच्छा मिलता है:फातिमा सना शेख

अभिनेत्री फातिमा सना शेख ने कहा है कि उन्हें निर्देशक अनुराग बसु के साथ काम करना पसंद है क्योंकि उनके सेट पर खाना अच्छा मिलता है। अभिनेत्री अगली बार अनुराग बसु द्वारा निर्देशित मेट्रो इन दिनों में दिखाई देंगी। एक्ट्रेस ने आखिरी बार बसु के साथ क्राइम-कॉमेडी फिल्म लूडो के लिए काम किया था। अभिनेत्री ने हाल ही में अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अनुराग बासु के साथ अपनी एक तस्वीर साझा की और कैप्शन दिया अरे आप! सेट पर वापस जाने का इंतजार नहीं कर सकती।

अभिनेत्री ने कहा, मैं इस महीने मेट्रो के सेट पर जाने के लिए वास्तव में उत्साहित हूं। मैं दादा (अनुराग बसु) से प्यार करती हूं। वह एक प्रतिभाशाली निर्देशक हैं। उनके पास स्क्रीन पर जादू पैदा करने का एक तरीका है और मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे फिर से उनके साथ काम करने का और उनकी जादुई दुनिया का हिस्सा बनने का मौका मिल रहा है।

उन्होंने कहा, वह अपने अभिनेताओं से सर्वश्रेष्ठ निकालते हैं और इससे भी अच्छी बात यह है कि उनके सेट पर हमेशा बढ़िया खाना होता है। बाल कलाकार के रूप में अभिनेत्री फातिमा ने चाची 420 और बड़े दिलवाला जैसी फिल्मों में काम किया है। उन्होंने आखिरी बार सान्या मल्होत्रा और आमिर खान के साथ फिल्म दंगल में काम किया था।

फातिमा के अलावा, फिल्म में आदित्य रॉय कपूर, सारा अली खान, पंकज त्रिपाठी, कोंकणा सेन शर्मा, अनुपम खेर और नीना गुप्ता होंगी। यह फिल्म 8 दिसंबर, 2023 को रिलीज होने वाली है। मेट्रो इन दिनों के अलावा फातिमा की कुछ अन्य परियोजनाओं में सैम बहादुर है जिसमें वह प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भूमिका निभाएंगी, और धक धक भी है। दोनों पर काम चल रहा है। (आरएनएस)

शाहरुख खान संग कॉफी विद करण में डेब्यू करेंगे आर्यन खान

फिल्म निर्माता करण जौहर अपने चैट शो कॉफी विद करण के 8वें सीजन को लाने की तैयारी कर रहे हैं। शो में करण फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े सितारे से बातों-बातों में कई खुलासे करा लेते हैं, जो खूब सुर्खियां बटोरते हैं। बीते दिनों खबर आई थी कि कॉफी विद करण 8 की शुरुआत करण शाहरुख खान के साथ करने वाले हैं। अब कहा जा रहा है कि किंग खान के साथ उनके बेटे आर्यन खान चैट शो का हिस्सा बनेंगे।

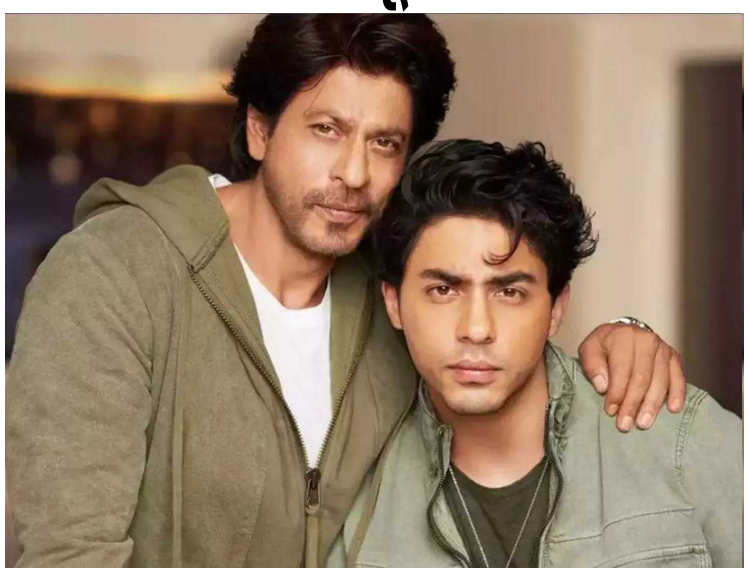

शाहरुख ने इस साल पठान के साथ बड़े पर्दे पर 4 साल बाद वापसी की थी और बीते साल वह अपनी फिल्म की तैयारी में ही जुटे हुए थे। इसी के चलते वह कॉफी विद करण 7 का हिस्सा नहीं बन पाए थे। ऐसे में अब फिल्म निर्माता चाहते हैं कि वह अपने शो की शुरुआत शाहरुख के साथ करे और उनसे उनकी फिल्म की सफलता और निजी जिंदगी के बारे में बातें कर सके।

रिपोर्ट के मुताबिक, शाहरुख के करण के चैट शो का हिस्सा बनने के पीछे की वजह पठान को मिली बॉक्स ऑफिस पर सफलता नहीं बल्कि बेटे आर्यन का डेब्यू है। रिपोर्ट के अनुसार, शाहरुख और आर्यन पहली बार ऐसे कैमरे के आगे बात करते हुए नजर आएंगे और ऐसे में उनके साथ गौरी खान भी इसका हिस्सा बन सकती हैं। ज्ञात हो कि कॉफी विद करण 8 अगस्त या सितंबर में डिज्नी+ हॉटस्टार पर आएगा।

रिपोर्ट के मुताबिक, कॉफी विद करण 8 में इस बार बॉलीवुड ही नहीं साउथ सिनेमा के भी मशहूर सितारे और जोड़ियां भाग लेने वाली है। रिपोर्ट्स के अनुसार, यश, अल्लू अर्जुन और ऋषभ शेट्टी चैट शो में नजर आएंगे। यश अपनी पत्नी राधिका पंडित के साथ तो अल्लू अपनी पत्नी स्नेहा रेड्डी के साथ शो का हिस्सा बनेंगे। अगर दोनों सितारे अपनी पत्नियों के साथ शो में आते हैं तो ऐसा पहली बार होगा।

आर्यन ने हाल ही में अपने लग्जरी स्ट्रीट वियर ब्रांड को लॉन्च किया था, जिसके विज्ञापन का निर्देशन भी उन्होंने ही किया था। आर्यन ने इस विज्ञापन का न सिर्फ निर्देशन किया बल्कि शाहरुख के साथ स्क्रीन भी साझा की थी। अब आर्यन अपनी वेब सीरीज स्टारडम लाने की तैयारी में हैं, जो फिल्म उद्योग की कहानी बयां करेगी। इसमें लक्ष्य लालवानी मुख्य भूमिका है तो रणबीर कपूर, शाहरुख और रणवीर सिंह कैमियो करेंगे। शाहरुख अब जल्द ही एटली की जवान में नयनतारा के साथ नजर आने वाले हैं, जो 7 सितंबर को रिलीज होगी। इसके बाद वह राजकुमार हिरानी की डंकी में तापसी पन्नू के साथ दिखाई देंगे और सलमान खान की टाइगर 3 में उनका कैमियो है। (आरएनएस)

फुकरे 3 और द आर्चीज की रिलीज डेट आई सामने

फुकरे फ्रेंचाइजी की तीसरी किस्त यानी फुकरे 3 का इंतजार दर्शक बेसब्री से कर रहे हैं, लेकिन अब इसे और आगे बढ़ा दिया गया है। पहले यह नवंबर में रिलीज होने वाली थी। अब इसकी रिलीज दिसंबर तक के लिए टल गई है, जिससे बेशक फिल्म के प्रशंसक निराश हो जाएंगे। एक्सेल एंटरटेनमेंट की फिल्म द आर्चीज की रिलीज भी सामने आ गई है। आइए जानते हैं पर्दे पर कब आएंगी दोनों फिल्में।

रिपोर्ट के मुताबिक, फुकरे 3 की रिलीज 1 महीने आगे बढ़ा दी गई है। अब निर्माता-निर्देशक इसे दिसंबर में रिलीज करने वाले हैं। 1 दिसंबर या 8 दिसंबर में से किसी भी एक तारीख को फाइनल किया जाना है। पिछले कुछ हफ्तों में हुई बातचीत में फिल्म को सर्दियों में दर्शकों के बीच लाने की बात हुई है। 1 दिसंबर को इसके पर्दे पर आने की संभावना ज्यादा है। जल्द ही इसे लेकर आधिकारिक घोषणा होगी।

फुकरे 3 और द आर्चीज दोनों ही फिल्में एक्सेल एंटरटेनमेंट के बैनर तले बन रही हैं। द आर्चीज से शाहरुख खान की बेटी सुहाना बॉलीवुड में कदम रख रही हैं। बीते दिन उनकी इस फिल्म का नया पोस्टर रिलीज हुआ था और साथ ही यह जानकारी दी गई थी कि ये फिल्म जल्द ही नेटफ्लिक्स पर आने वाली है। एक सूत्र ने बताया है कि द आर्चीज 24 नंवबर को रिलीज होने वाली है।

मृगदीप सिंह लांबा फुकरे 3 के निर्देशक हैं। पुलकित सम्राट, वरुण शर्मा, ऋचा चड्ढा, मनजोत सिंह और पंकज त्रिपाठी इसका हिस्सा हैं। 2013 में इस फिल्म का पहला भाग और 2017 में दूसरा भाग आया था और दोनों ने ही शानदार कमाई की थी। दूसरी तरफ द आर्चीज की निर्देशक जोया अख्तर हैं। वह इस फिल्म से सुहाना, खुशी कपूर और अमिताभ बच्चन-जया बच्चन के नाती अगस्त्य नंदा को लॉन्च कर रही हैं। फिल्म में तीनों की दोस्ती दिखाई जाएगी। बता दें कि 1999 में फरहान अख्तर और रितेश सिद्धवानी ने एक्सेल एंटरटेनमेंट की शुरुआत की थी। इस प्रोडक्शन कंपनी के तहत दिल चाहता है से लेकर शर्मा जी नमकीन तक कई सफल फिल्में बन चुकी हैं। इन दिनों फरहान डॉन 3 और जी ले जरा के काम में भी व्यस्त हैं। वे इन दोनों फिल्मों का निर्देशन कर रहे हैं। इसके अलावा मडगांव एक्सप्रेसऔर युधरा को वह रितेश के साथ मिलकर बना रहे हैं।

नवाजुद्दीन सिद्दीकी को हड्डी में ट्रांसजेंडर लुक देने में लग गए 6 महीने

बॉलीवुड एक्टर नवाजुद्दीन सिद्दीकी जल्द अक्षत अजय शर्मा की फिल्म हड्डी में नजर आएंगे.इस फिल्म में नवाजुद्दीन एक ट्रांसजेंडर की भूमिका अदा करते दिखेंगे. फिल्म के फर्स्ट लुक में नवाजुद्दीन का ट्रांसजेंडर लुक नजर आ रहा है, जिसे फैंस बहुत पसंद भी कर रहे हैं. इस पोस्टर में वह लाल साड़ी और भारी गहनों में दिख रहे हैं. इस फिल्म में एक छोटे शहर के लड़के हरी की कहानी दिखाई जाएगी, जो भारत के ट्रांसजेंडर समाज की वास्तविकता को दिखाएगा.

इस फिल्म को राधिका नंदा प्रोड्यूस कर रही हैं. उनका कहना है कि इस फिल्म की टीम को नवाजुद्दीन का लुक फाइनल करने में करीब आधा साल लग गया. उन्होंने यह भी बताया कि इस रोल के लिए

नवाजुद्दीन की साड़ी बांधने में आधा घंटा और मेकअप करने में तीन घंटा लग जाता था. राधिका ने कहा- नवाजुद्दीन को समझ आ गया था कि औरतों को हर रोज़ तैयार होना कितना मुश्किल है और तैयार हो कर काम करना उससे भी ज्यादा मुश्किल है. हमें इस लुक को फाइनल करने में 6 महीने लग गए. हमें कई मेकअप आर्टिस्टों से सलाह लेनी पड़ी थी.राधिका ने आगे बताया कि जब नवाजुद्दीन ने भले ही साड़ी पहली बार पहनी हो, लेकिन वह इसे पहन कर घंटों शूटिंग कर लेते थे. साथ ही लुक के लिए प्रोस्थेटिक्स का भी सहारा लिया गया , लेकिन आइडिया यही था कि लुक को नैचुरल रखा जाए. नवाजुद्दीन की तारीफ करते हुए राधिका ने कहा कि नवाज बहुत ईमानदार, अनुशासित और हार्ड वर्किंग एक्टर हैं. उन्होंने बताया कि पूरी शूटिंग के लिए उन्होंने 80 साड़ियां यूज की है. जब नवाज ने ऐसे लुक में खुद को पहली बार आइने में देखा तो वह खुश हो गए थे. इससे पहले उन्होंने खुद को कभी ऐसा नहीं देखा था.

हिंदी प्रदेशों में विपक्ष हारेगा!

हरिशंकर व्यास

इस गपशप को 24 तक सेव रखें। तब हिसाब लगा सकेंगे कि कर्नाटक की जीत के बाद कांग्रेस और विपक्ष ने अपने हाथों अपने पांवों पर कब-कब कुल्हाड़ी मारी। पहली बात, कर्नाटक ने कांग्रेस और पूरे विपक्ष का दिमाग फिरा दिया है। बुजुर्ग शरद पवार भी बता रहे हैं कि हालात देख लोगों का बदलाव का मूड समझ आ रहा है। उधर राहुल गांधी ने कहा कि मध्य प्रदेश में कांग्रेस 150 सीटें जीतेगी। सबसे बड़ी बात जो विपक्ष की एकता कोशिशों में मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी, अखिलेश यादव हालातों के इलहाम में भाव खाते हुए हैं। एक और गंभीर बात कि पूरे विपक्ष ने कर्नाटक में भाजपा की हार के उलटे अर्थ निकाले हैं। अशोक गहलोत, दिग्विजय सिंह-कमलनाथ-भूपेश बघेल सबका फोकस जनता को रेवड़ियां देने, वादे करने पर बना है। रेवड़ियों से कांग्रेस आगे हिमाचल, राजस्थान, कर्नाटक मॉडल पर विधानसभा-लोकसभा चुनाव लड़ने की रणनीति बनाते हुए है। ऐसे ही अरविंद केजरीवाल भी रेवड़ियों की मार्केटिंग से नरेंद्र मोदी को पछाड़ने की गलतफहमी में हैं। जात और रेवड़ी के एक भ्रमजाल में विपक्ष फंसते हुए है। तभी दिसंबर के विधानसभा चुनावों में नरेंद्र मोदी ऐसा धोबी पाट मारेंगे कि विपक्ष लोकसभा चुनाव लड़ने लायक नहीं रहेगा। सेमीफाइनल में ही कांग्रेस उत्तर भारत में आउट हो चुकी होगी। हिंदीभाषी उत्तर भारत की 227 लोकसभा सीटों में कांग्रेस तीन-चार सीटें नहीं जीत पाएगी तो पूरा विपक्ष इनमें बीस-पच्चीस सीटे जीत जाए तब भी बड़ी बात!

तभी इस गपशप की कटिंग काट कर रखें। शरद पवार, राहुल गांधी, नीतीश कुमार, अरविंद केजरीवाल व अखिलेश यादव हालातों के इलहाम में सपने बना रहे हैं जबकि रियलिटी यह है कि नरेंद्र मोदी और अमित शाह उत्तर भारत के मतदाताओं की मानसिकता अनुसार चुनाव की तैयारी कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी, अमित शाह, जेपी नड्डा आदि की हाल में जो घंटों बैठक हुई है उसमें मेरी जानकारी और मेरा मानना है कि ये रत्ती भर विपक्ष की जात तथा रेवड़ी राजनीति की चिंता करते हुए नहीं हैं। भाजपा का सितंबर से दिसंबर के बीच पूरा फोकस इस नैरेटिव का होगा कि मोदीजी विश्व नेता हैं। हिंदू धर्म रक्षक हैं और दिसंबर के आखिर में हिंदीभाषी लोग जब वोट डालें तो अयोध्या में प्रभु राम के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के लिए वोट डालें!

सितंबर में जी-20 की शिखर बैठक हो रही है। विश्व नेता दिल्ली आ रहे हैं। अक्टूबर में दशहरा-दीपवाली के साथ रामजी और अयोध्या का जगमग होना शुरू होगा। दिसंबर में संभव है पूर्वांचल-बिहार के लोगों के मुख्य शक्तिपीठ विंध्याचल मंदिर के नवनिर्माण-कॉरिडोर का नरेंद्र मोदी उद्घाटन करें। लोगों को अयोध्या-विंध्याचल की ओर ले जाने, घर-घर मैसेज बनवाने का, काशी-विंध्याचल-अयोध्या की यात्रा का महाअभियान चलाया जाए। मतलब नीतीश कुमार-तेजस्वी-अखिलेश जातिवादी राजनीति करते हुए वही यूपी-बिहार में मई तक घर-घर चलो अयोध्या का नारा गूंजता हुआ।

मैं कई बार लिख चुका हूं कि नरेंद्र मोदी कैलेंडर बना कर राजनीति करते हैं। सो, सितंबर 2023 से मई 2024 तक का उनका कैलेंडर वापिस सत्ता पाने के लिए आर-पार की लड़ाई की तैयारियों का है। बहुत संभव है 2019 की तरह पाकिस्तान-चीन की सीमा पर फिर वह कुछ हो, जिससे उत्तर भारत के हिंदू वोट सब भूल कर दिन-रात इस राग में खो जाएं कि नरेंद्र मोदी की जगह है कौन? यदि वे फिर नहीं जीते तब देश बचेगा ही नहीं।

कह सकते हैं कि कर्नाटक में जब बजरंग बली का जादू नहीं चला तो हिंदी भाषी प्रदेशों में भी जनता तंग आ गई है! मगर इस तरह सोचना मतदाताओं की मनोदशा और हिंदीभाषी प्रदेशों की तासीर व जमीनी गणित से जुदा बात है। पहली बात कर्नाटक में भी भाजपा का अपना वोट नहीं डिगा है। 36 प्रतिशत वोट मिले ही हैं। कर्नाटक में कांग्रेस की आंधी इसलिए आई क्योंकि दलित-मुस्लिम-ईसाई तथा कांग्रेस के अपने कोर वोट के अलावा वह मध्यवर्ग जुड़ा जो चार साल से भाजपा सरकार, उसके मंत्रियों, विधायकों के भ्रष्टाचार के हल्ले से खुन्नस में आ गया था। लोगों की बेहाली, महंगाई, बेरोजगारी आदि की तमाम तकलीफें बोम्मई सरकार के 40 प्रतिशत की बदनामी से जुड़ कर पकती गईं। ऊपर से नरेंद्र मोदी और अडानी ग्रुप, गुजराती अमूल के शोर ने लोगों का मूड बनाया। सो, भ्रष्टाचार के खिलाफ फ्लोटिंग वोट, घर बैठने वाले मतदताओं ने मतदान केंद्र जा कर वोट डाला।

मेरा मानना था, है और लगातार लिखता रहा हूं कि भारत में सत्ता परिवर्तन का प्रमुखतम निर्णायक कारण भ्रष्टाचार की दुखती नस है। कर्नाटक चुनाव से पहले अडानी ग्रुप, क्रोनी पूंजीवाद के साथ मोदी के जुड़ाव पर राहुल गांधी के फोकस से जहां उनकी मर्द, लड़ाकू और मेहनती नेता की इमेज बनी वही कांग्रेस की हवा। कर्नाटक में मैसेज बना कि मोदी की सरकार तो दो-तीन खरबपतियों के लिए है। हां, यही है जीत का, कांग्रेस, विपक्ष की उम्मीद का असली सूत्र! लेकिन कर्नाटक के बाद राहुल, कांग्रेस और विपक्ष इस बात को भूल बैठा है। इसलिए आश्चर्य नहीं जो अडानी ग्रुप यह कैंपेन चलाते हुए है कि हम तो असंभव को संभव कर दिखाते हैं। एक हिसाब से वही नारा जो मोदी खुद अपने लिए चलवाते हैं कि मोदी है तो मुमकिन है!

भ्रष्टाचार के आम परसेप्शन ने कर्नाटक में भाजपा को हराया। कर्नाटक में लोकल भ्रष्टाचार और केंद्र में मोदी-अडानी भ्रष्टाचार के हल्ले से एक और एक ग्यारह हुआ। तभी बजरंग बली की दुहाई के बाद भी भाजपा नहीं जीती।

मगर कैसा आश्चर्य जो नतीजों के बाद पूरा विपक्ष मोटा-मोटी इस खामोख्याली में (इसे प्रायोजित चुनावी विश्लेषण में जात, रेवड़ी व शिवकुमार के करिश्मे जैसी चर्चाओं से पकाया गया) है कि जात, तंगी, बदहाली से अपने आप माहौल व हवा बदलते हुए है। जरूरत इतनी भर है कि कांग्रेस और विपक्ष खूब वादे करें, लोगों का दिल-दिमाग नकद पैसा दे कर या उन्हें तमाम फायदे करा कर जीता जा सकता है! हैरानी की बात है जो कांग्रेस व विपक्ष के पुराने अनुभवी नेता भी यह नहीं समझे हुए कि 2014 में भ्रष्टाचार पहला मुद्दा था और उस पर मोदी के हिंदू-गुजरात मॉडल की सवारी थी। यही बात वीपी सिंह के समय हुई थी। भ्रष्टाचार के हल्ले पर उनकी ईमानदार की सवारी थी। यही फिनोमिना अरविंद केजरीवाल के अचानक नेता बनने की है। झाड़ू भ्रष्टाचार की सफाई का सिंबल था। पर केजरीवाल भी अब रेवड़ी मॉडल से फूले हुए हैं। तभी देखिएगा मई 2014 में रेविड़यों का मॉडल उनके उम्मीदवारों की दिल्ली में जमानत जब्त करवाता हुआ होगा।

विषयांतर हो रहा है और गपशप फैलती हुई है। मोटी बात विपक्ष कर्नाटक नतीजों के बाद पटरी से उतर गया है। नरेंद्र मोदी की परेशानी व बदनामी वाली चुनौती खत्म हो गई है। मतलब लोग भूलते हुए हैं कि मोदी सरकार अमीरों की सरकार है। न वे भ्रष्ट हैं और न अडानी। पहलवान आंदोलन, बेरोजगारी, मंहगाई से लोगों का दिमाग नहीं बदलता है। इस बात को भी नोट रखें कि नरेंद्र मोदी लगातार 100 करोड़ लोगों को लगभग फ्री अनाज या नकद मदद खाते में डलवा रहे हैं। हालात यह है कि गरीब भी फ्री का राशन ले कर 25-40 रुपए प्रति किलो की रेट पर बाजार में बेच कर कमाई करते हुए है। आम वोटों के लिए रेवड़ी योजनाएं छोटी-सामान्य बात है। इससे लोगों में वोट डालने का जोश नहीं बनता है। वैसा तो कतई नहीं जैसा कर्नाटक में कांग्रेस के लिए बना था।

सू- दोकू क्र.058

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.57 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1

खुदरा मुद्रास्फीति में नरमी

अजय दीक्षित

मई में खुदरा मुद्रास्फीति घटकर 25 माह के सबसे निचले स्तर 4.25 फीसद पर आ गई। सोमवार को जारी सरकारी आंकड़ों के मुताविक, खाद्य एवं ईंधन उत्पादों के दाम नरम पड़ने से यह नरमी आई है। अप्रैल, 2021 में खुदरा मुद्रास्फीति 4.23 फीसद थी जो मई, 2023 में 4.25 फीसद दर्ज की गई। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति अप्रैल, 2023 में 4.7 फीसद रही थी वहीं एक साल पहले मई, 2022 में खुदरा मुद्रास्फीति 7.04 फीसद के स्तर पर थी। इस प्रकार लगातार चौथे महीने खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट आई है। इसके अलावा, लगातार तीसरा महीना है जब खुदरा मुद्रास्फीति भारतीय रिजर्व बैंक के संतोषजनक स्तर पर है। गौरतलब है कि सरकार ने भारतीय रिजर्व बैंक को खुदरा मुद्रास्फीति दो फीसद की घट-बढ़ के साथ चार फीसद पर रखने का दायित्व सौंपा हुआ है।

खुदरा मुद्रास्फीति में गिरावट का मुख्य कारण खाद्य एवं ईंधन उत्पादों के दाम नरम पड़ना रहा। खाद्य उत्पादों की उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में करीब आधी हिस्सेदारी होती है। ईंधन के दाम भी नरम पड़े हैं। आंकड़ों के मुताबिक, अप्रैल महीने में ईंधन एवं प्रकाश खंड की मुद्रास्फीति 5.52 फीसद दर्ज की गई थी, जो मई महीने में 4.64 फीसद रह गई। मानसून की स्थिति बेहतर रहती है तो खुदरा मुद्रास्फीति और नरम पड़ने की उम्मीद की जा सकती है। मौसम विज्ञानी मानसून के सामान्य रहने की भविष्यवाणी कर चुके हैं। ऐसे में उम्मीद है कि रवी फसल अच्छी रहेगी। अलवत्ता, दालें महंगाई बढ़ने का कारण बन सकती हैं। बाजार में दालों खासकर उड़द और अरहर दालों के दाम हाल के दिनों में तेजी से बढ़े हैं। इसलिए सरकार ने इनके भण्डारण की सीमा तय कर दी है ताकि जमाखोरी और कालाबाजारी न होने पाए। गेहूं भण्डारण की ऊपरी सीमा भी तय कर दी गई है। पन्द्रह साल में पहली बार है जब गेहूं के बढ़ते दाम पर लगाम लगाने के लिए सरकार ने मार्च, 2024 तक तत्काल प्रभाव से गेहूं की भण्डारण सीमा (स्टॉक लिमिट) लागू कर दी है। पिछली बार 2008 में गेहूं की स्टॉक लिमिट लगाई गई थी। दरअसल, थोक और खुदरा कीमतें ज्यादा नहीं बढ़ने के वावजूद पिछले महीने मण्डी में गेहूं के दाम 8 फीसद बढ़े। इसलिए कृत्रिम कमी पैदा करने की कोशिशों को नाकाम करने के लिए गेहूं के लिए स्टॉक लिमिट लागू की गई है। बहरहाल, तमाम कोशिशें हैं कि महंगाई उचित स्तर पर रहे।

राह की भटकन

एक सूफी फकीर मस्जिद में बैठकर अल्लाह से अपनी लौ में लीन थे। चारों तरफ प्रकाश फैला था। तभी अचानक झरोखे से एक पक्षी अन्दर आ गया। वह कुछ देर तक तो अन्दर इधर-उधर होता रहा। फिर बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। कभी वह इस कोने से निकलने की कोशिश करता तो कभी उस कोने से। उसकी छटपटाहट बढ़ती जा रही थी। कभी वह दीवार से टकराता तो कभी छत से। किन्तु उस तरफ नहीं जाता, जिस झरोखे से वह अन्दर आया था। फकीर बहुत ध्यान से देख रहा था। उसे चिंता हो रही थी कि उसे कैसे समझाए कि जैसे अन्दर आने का रास्ता निश्चित है, उसी प्रकार बाहर जाने का रास्ता भी निश्चित है। द्वार तो वही होता है, किन्तु सिर्फ दिशा बदल जाती है7 फकीर ने उसे बाहर निकालने की कोशिश की, किन्तु वह उतना ही घबरा जाता और बेचैन होने लगा। फकीर का ध्यान पक्षी से हटा और वह कुछ सोचने लगा। इस संसार में आकर हम क्या इसी परिंदे की तरह नहीं उलझ जाते जब हम जीवन में प्रवेश कर जाते हैं तब हमारे पास उससे निकलने का रास्ता तो होता है, पर अज्ञान के कारण हम उस रास्ते को देख नहीं पाते। जीवन के प्रपंच हमें भांति-भांति से कष्ट पहुंचाते रहते हैं और हम छटपटाते रहते हैं।

प्रस्तुति : विनय मोहन

डीएम ने ग्रामीणों के साथ जंगल में वर्षा जल संरक्षण के लिए खुदाई कर सैकड़ों खातियां तैयार की

कार्यालय संवाददाता

उत्तरकाशी। जिलाधिकारी अभिषेक रूहेला के साथ खरवां गॉव के ग्रामीणों ने जल संचय अभियान के तहत वर्षा जल संरक्षण के लिए सैकड़ों खंतियां तैयार कर मानसून के आगमन के साथ ही जल संरक्षण की मुहिम को और तेजी से संचालित करने का संकल्प व्यक्त किया। इस दौरान जिलाधिकारी ने खरवां गॉव का दौरा कर ग्रामीणों की समस्याएं सुनी और स्थानीय बच्चों से बातचीत कर उनकी शिक्षा-दीक्षा के बारे में जानकारी ली। जिलाधिकारी अभिषेक रूहेला ने रविवार को डुंडा ब्लॉक के खरवां गांव पहुँचकर ग्रामीणों को जल संचय अभियान को कामयाब बनाने के लिए प्रेरित किया।

जिलाधिकारी के साथ बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने निकटवर्ती जंगल में जाकर वर्षा जल संरक्षण के लिए खुदाई कर सैकड़ों खंतियां तैयार की। इस अभियान में ग्राम प्रधान जगदंबा देवी की अगुवाई में महिलाओं ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। जल संचय अभियान के अंतर्गत जिलाधिकारी के तत्वधान में ग्राम पंचायत खरवा मैं ग्रामीणों एवं कर्मचारी अधिकारियों के सहयोग से श्रमदान कर 96 खतियां खोदी गई, भारी बारिश के बावजूद भी ग्रामीण महिलाओं ने एवं अधिकारी कर्मचारियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं जल संवर्धन हेतु जिलाधिकारी महोदय द्वारा की गई पहल में प्रतिभाग किया गया. जन सूचना अभियान 5 जून प्रारंभ किया गया, जो कि 16 जुलाई तक निरंतर जारी रहेगा, अभियान में अब तक 20,000 से ऊपर खतियां छोटे छोटे तालाब जनपद की सभी ग्राम पंचायतों में खुदी जा चुकी है इस मौके पर जिलाधिकारी ने कहा कि जिले में वर्षा जल संरक्षण के लिए प्रशासन के द्वारा जन सहभागिता से जल संचय अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के दौरान श्रमदान कर बारिश के पानी को रोकने के लिए बड़े पैमाने पर जल संरक्षण खंतियां बनाई जा रही हैं। अभियान का समापन आगामी 16 जुलाई को हरेला पर्व पर वृहद स्तर पर वृक्षारोपण के साथ होगा। इस मुहिम में जिले भर में एक लाख खंतियां तैयार किए जाने और एक लाख पौधों का रोपण किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीणों द्वारा बड़े स्तर पर उत्साहजनक भागीदारी को देखते हुए नि:संदेह यह मुहिम सफल होगी। जिलाधिकारी ने इस दौरान खरवां गॉव जाकर ग्रामीणों की समस्याओं एवं गॉव के विकास तथा रोजगार से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की और स्थलीय निरीक्षण भी किया। जिलाधिकारी ने कहा कि प्राकृतिक रूप से समृद्ध इस गांव के निवासियों को जिला मुख्यालय से निकट होने का लाभ उठाते हुए सब्जी उत्पादन, डेयरी व्यवसाय जैसे संभावनाशील क्षेत्रों में आगे बढकर काम करना चाहिए। प्रशासन इस काम में ग्रामीणों की पूरी सहायता करेगा।

जिलाधिकारी ने कहा कि खरवां गॉव में चारा विकास की योजना संचालित करने के साथ ही फलदार पौधों का रोपण कराने का भी इंतजाम किया जाएगा। उन्होंने ग्रामीणों की समस्याओं के निस्तारण के लिए मौके पर ही संबंधित अधिकारियों के निर्देश देते हुए कहा कि गॉव में पंचायत घर के निर्माण, सिंचाई व्यवस्था में सुधार तथा बिजली पानी से संबंधित समस्याओं का शीघ्र निस्तारण कराया जाएगा। ग्रामीणों द्वारा जिलाधिकारी से खरवां से भराण गॉव तक सड़क बनाए जाने का आग्रह किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि इस सड़क के लिए जिला योजना में विचार किया जाएगा। जिलाधिकारी ने ग्रामीणों को मतदाता सूची के पुनरीक्षण की जानकारी देते हुए नए मतदाताओं के नाम जोड़े जाने और दिवंगत लोगों के नाम हटाए जाने हेतु सूचना निर्धारित फार्म पर बीएलओ को उपलब्ध कराने की अपील की। इस मौके पर जिलाधिकारी ने गॉव के बच्चों से भी अलग से बातचीत कर उनकी शिक्षा व्यवस्था, आंगनवाड़ी केन्द्र के संचालन, टीकाकरण आदि के बारे मालूमात की। जिलाधिकारी ने बच्चों को नियमित रूप से स्कूल जाने और मन लगाकर पढाई करने की अपील की। इस अवसर पर परियोजना निदेशक डीआरडीए रमेश चन्द्र, खण्ड विकास अधिकारी डुण्डा राकेश बिष्ट, युवा कल्याण अधिकारी विजय प्रताप भंडारी, रेंज अधिकारी वन विभाग प्रीतम सिंह चौहान, ग्राम प्रधान जगदम्बा देवी उपस्थित रहे।

150 से अधिक बार रक्तदान कर चुके शिरोमणि अनिल वर्मा को किया सम्मानित

संवाददाता

देहरादून। डोईवाला ब्लॉक सभागार में जर्नलिस्ट यूनियन ऑफ उत्तराखंड डोईवाला इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उप जिलाधिकारी डोईवाला शैलेंद्र सिंह नेगी द्वारा रक्तदाता शिरोमणि अनिल वर्मा को 150 से अधिक बार रक्तदान करने हेतु शॉल ओढ़ाकर ,पुष्प गुच्छ तथा पुरस्कार प्रदान कर विशेष रूप से सम्मानित किया। उप जिलाधिकारी श्री नेगी ने कहा कि खून की एक-एक बूंद इतनी कीमती होती है कि उसका मूल्य नहीं चुकाया जा, खून सकता। एक स्वस्थ व्यक्ति अपने शरीर का खून देकर दूसरे जरूरतमंद व्यक्ति को नई जिंदगी देता है। आमतौर पर जहां लोग अपने स्वार्थ अथवा अंधविश्वास के चलते रक्तदान करने से बचते हैं वहीं एक शख्स ऐसा भी है जिसने 150 बार अपना ब्लड डोनेट करके अब तक हजारों लोगों की जिंदगी बचाई है। और वो शख्स है यूथ रेडक्रास कमेटी के चेयरमैन व भारत रत्न पं० गोविंद बल्लभ पंत रक्तदाता शिरोमणि अनिल वर्मा जो विगत 55 वर्षों से लगातार रक्तदान, नेत्रदान, विकलांग सेवा, निर्धन सेवा आदि अनेक समाज सेवा के पुनीत कार्यों हेतु धन्यवाद के पात्र हैं। ऐसे लोगों को सम्मानित करना हमारे लिए भी गौरव का अवसर है।

उत्तराखंड जर्नलिस्ट यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष उमा शंकर मेहता ने श्री वर्मा को सम्मानित करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि रक्तदान करने वाला व्यक्ति केवल एक मृतप्राय व्यक्ति का जीवन ही नहीं बचाता बल्कि उसके परिवार और संबंधियों की खुशियां लौटाने का पुण्य कार्य भी करता है। विशिष्ट अतिथि इंडियन जर्नलिस्ट यूनियन के राष्ट्रीय सचिव जय सिंह रावत ने कहा कि श्री अनिल वर्मा विगत अनेक वर्षों से रक्तदान , नेत्रदान सहित विभिन्न सामाजिक कार्य निस्वार्थ रूप से कर रहे हैं। उन्हें जर्नलिस्ट यूनियन के कार्यक्रम में विशेष रूप से सम्मानित किया जाना निश्चित रूडोईवाला ब्लॉक सभागार में जर्नलिस्ट यूनियन ऑफ उत्तराखंड डोईवाला इकाई द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उप जिलाधिकारी डोईवाला शैलेंद्र सिंह नेगी द्वारा रक्तदाता शिरोमणि अनिल वर्मा को 150 से अधिक बार रक्तदान करने हेतु शॉल ओढ़ाकर ,पुष्प गुच्छ तथा पुरस्कार प्रदान कर विशेष रूप से सम्मानित किया। उप जिलाधिकारी श्री नेगी ने कहा कि खून की एक-एक बूंद इतनी कीमती होती है कि उसका मूल्य नहीं चुकाया जा, खून सकता। एक स्वस्थ व्यक्ति अपने शरीर का खून देकर दूसरे जरूरतमंद व्यक्ति को नई जिंदगी देता है। आमतौर पर जहां लोग अपने स्वार्थ अथवा अंधविश्वास के चलते रक्तदान करने से बचते हैं वहीं एक शख्स ऐसा भी है जिसने 150 बार अपना ब्लड डोनेट करके अब तक हजारों लोगों की जिंदगी बचाई है और वो शख्स है यूथ रेडक्रास कमेटी के चेयरमैन व भारत रत्न पं० गोविंद बल्लभ पंत रक्तदाता शिरोमणि अनिल वर्मा जो विगत 55 वर्षों से लगातार रक्तदान, नेत्रदान, विकलांग सेवा, निर्धन सेवा आदि अनेक समाज सेवा के पुनीत कार्यों हेतु धन्यवाद के पात्र हैं। ऐसे लोगों को सम्मानित करना हमारे लिए भी गौरव का अवसर है।

उत्तराखंड जर्नलिस्ट यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष उमा शंकर मेहता ने अनिल वर्मा को सम्मानित करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि रक्तदान करने वाला व्यक्ति केवल एक मृतप्राय व्यक्ति का जीवन ही नहीं बचाता बल्कि उसके परिवार और संबंधियों की खुशियां लौटाने का पुण्य कार्य भी करता है। विशिष्ट अतिथि इंडियन जर्नलिस्ट यूनियन के राष्ट्रीय सचिव जय सिंह रावत ने कहा कि अनिल वर्मा विगत अनेक वर्षों से रक्तदान , नेत्रदान सहित विभिन्न सामाजिक कार्य निस्वार्थ रूप से कर रहे हैं। उन्हें जर्नलिस्ट यूनियन के कार्यक्रम में विशेष रूप से सम्मानित किया जाना निश्चित रूप एक बड़ा ही सराहनीय कदम है। रक्तदाता शिरोमणि अनिल वर्मा ने उन्हें सम्मानित करने पर उपजिलाधिकारी शैलेन्द्र सिंह नेगी का धन्यवाद तथा उत्तराखंड जर्नलिस्ट यूनियन के प्रदेश एवं डोईवाला इकाई के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि उनके जीवन का उद्देश्य देश व प्रदेश में स्वैच्छिक रक्तदान की ऐसी क्रांति लाना है जिसमें 'कोई भी व्यक्ति रक्त की कमी से न मरे तथा कोई भी स्वस्थ युवा रक्तदान किये बिना न मरे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे स्वयं रक्तदान करने घ्के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर रक्तदाता प्रेरक के रूप में विचार गोष्ठियों में युवाओं को प्रेरित करते आ रहे हैं।

राज्य आंदोलनकारियों का धरना जारी

देहरादून (सं)। राज्य आंदोलनकारियों के लिये राज्याधीन सेवाओं में 10 फीसदी क्षैतिज आरक्षण की बहाली और चिन्हीकरण की प्रक्रिया दोबारा शुरू करने की मांग को लेकर संयुक्त मंच का धरना इक्कीसवें दिवस भी जारी रहा। संयुक्त आंदोलनकारी मंच ने देहरादून जिले के समस्त आंदोलनकारियों से अपील की है कि वह सोमवार को चिन्हीकरण के सवाल पर होने वाले जिलाधिकारी कार्यालय घेराव कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में भागीदारी करें। चिन्हित राज्य आंदोलनकारी संयुक्त समिति उत्तराखंड के केंद्रीय महामंत्री नवीन नैथानी ने बताया कि 26 के कार्यक्रम के पश्चात शहीद स्मारक पर सभी साथियों से विचार विमर्श के पश्चात आगे के कार्यक्रमों की घोषणा की जायेगी। धरने पर बैठने वालों में उत्तरकाशी के विजयपाल सिंह राणा, रामलाल खंडूड़ी, अम्बुज शर्मा, क्रांति कुकरेती आदि शामिल थे।

बारिश के बीच अतिथि शिक्षकों ने किया निदेशालय पर प्रदर्शन

संवाददाता

देहरादून। नियमितीकरण के लिए ठोस नीति बनाने की मांग को लेकर अतिथि शिक्षकों ने शिक्षा निदेशालय में प्रदर्शन किया। बारिश के बीच निदेशालय में डटे अतिथि शिक्षकों ने कहा कि स्थायी शिक्षकों की नई नियुक्ति और पोस्टिंग की वजह से अतिथि शिक्षकों को हटाया जा रहा है। हटाए गए अतिथि शिक्षकों के दूसरे स्कूलों में समायोजन के आदेश के बावजूद कार्यवाही नहीं हो रही। यदि सरकार ने जल्द उचित कार्यवाही न की तो आंदोलन तेज कर दिया जाएगा। अतिथि शिक्षक राजेश धामी, विवेक कोठियाल ने कहा कि अतिथि शिक्षक वर्षों से प्रदेश के दूरदराज दुर्गम क्षेत्र में शैक्षिक सुधार में योगदान दे रहे हैं। अतिथि शिक्षकों के अपने दायित्वों के प्रति समर्पण की वजह से शिक्षा व्यवस्था भी बेहतर हुई है। लेकिन अतिथि शिक्षकों के सुरक्षित भविष्य के लिए अब तक कोई नीति नहीं बनाई गई। वक्ताओं ने कहा कि नई नियुक्ति और पोस्टिंग की वजह से कई अतिथि शिक्षक हटा दिए जाते हैं। अपने समायोजन के लिए उन्हें काफी भटकना पड़ता है। महीनों तक उनका समायोजन नहीं किया जाता। धामी और कोठियाल ने कहा कि हटाए जाने वाले अतिथि शिक्षकों को कि बीआरपी-सीआरपी के रूप में तैनाती दी जाए। उन्हें समग्र शिक्षा के हाईस्कूल और जूनियर हाईस्कूलों में भी तैनाती दी जा सकती है। यदि सरकार ने जल्द उचित निर्णय नहीं लिया तो आंदोलन को तेज कर दिया जाएगा। धरने में प्रणव रावत, अशोक भोज, स्वेता रावत, जगदीश सिंह, भूपाल नेगी, दीपक सिंह बिष्ट, नागेंद्र, विपिन सकलानी, जीवन, नरेश, प्रकाश नेगी, राजकुमार, देवेंद्र भारती, प्रमोद बुटोला, सुशील नेगी, मनोज सिंह राजेंद्र प्रसाद आदि शामिल रहे।

एक नजर

अस्पताल में हिंदू बच्चे का खतना करने का आरोप, उपमुख्यमंत्री ने दिए जांच के आदेश

बरेली। एम खान अस्पताल में हिंदू बच्चे का खतना करने का आरोप लगा तो प्रकरण लखनऊ तक पहुंच गया। उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक ने सीएमओ डा. बलवीर सिंह को फोन कर 24 घंटे में जांच के आदेश दिए। उपमुख्यमंत्री के आदेश के बाद आनन-फानन एसीएमओ डा. भानू प्रकाश की अध्यक्षता में चार सदस्यीय टीम बनी, जोकि शाम छह बजे अस्पताल पहुंची। ऑपरेशन करने वाले डा. जावेद, वार्ड स्टाफ के बयान दर्ज किए।शुक्रवार शाम को स्टेडियम रोड स्थित एम खान अस्पताल में इस मामले में हंगामा हुआ था। संजयनगर निवासी युवक का कहना था कि उनके ढाई वर्षीय बेटे की जीभ निचले

हिस्से से जुड़ी होने के कारण ठीक से बोल नहीं पाता। 18 जून को उसे एम खान अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने सात हजार रुपये खर्च से छोटे ऑपरेशन की बात कही। शुक्रवार को दोबारा अस्पताल पहुंचकर वहां कार्यरत रिश्तेदार से पैरवी कराई तो दो हजार रुपये कम कर पांच हजार जमा करा लिए गए। स्टाफ ने अंग्रेजी में कई लाइनें लिखी एक फाइल पर हस्ताक्षर कराए। बच्चे के ताऊ के अनुसार, हस्ताक्षर करते समय मैंने टोका था कि कम पढ़ा होने से अंग्रेजी नहीं समझ सकता। इस पर डॉक्टर ने कहा कि कोई खास बात नहीं है, हस्ताक्षर कर दो। कुछ देर बाद स्टाफ बच्चे का ऑपरेशन कर दोबारा वार्ड में लिटा गया। उसे गर्मी लगने पर कपड़े हटाए तो देखा कि मूत्रमार्ग पर पट्टी बंधी है। उन्होंने षड्यंत्र कर खतना करने का आरोप लगाया। हंगामा होने पर डॉक्टर एम खान का कहना था कि बच्चे के मूत्रमार्ग में बार-बार संक्रमण हो रहा था। यही बीमारी बताकर उसे भर्ती किया गया था। उसके स्वजन की सहमति से मूत्रमार्ग की कुछ त्वचा काटी गई। इसी उपचार की फाइल बनी है। जीभ के ऑपरेशन की बात तय नहीं हुई थी। बच्चे के पिता ने बारादरी थाने में तहरीर देकर कहा था कि एम खान अस्पताल में षड्यंत्र रचकर घटना की गई। डा. जावेद पर जानबूझकर खतना करने का आरोप लगाया।

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर करंट पफैलने से एक महिला की मौत

नई दिल्ली। बारिश की वजह से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन परिसर में करंट फैलने से एक महिला की मौत हो गई है। महिला सुबह अपने पति के साथ चंडीगढ़ जाने के लिए ट्रेन पकड़ने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंची थी स्टेशन परिसर में बिजली के एक खंभे के संपर्क में आने पर महिला की मौत हो गई। रेलवे स्टेशन परिसर में करंट दौड़ने की जानकारी मिलते ही एफएसएल टीम मौके पर पहुंच गई है। महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए लेडी हार्डिंग अस्पताल भेज दिया है। इस घटना को लेकर रेलवे और पुलिस मामले की जांच की जा रही है। वहीं रेलवे ने अपना पक्ष जारी करते हुए कहा कि प्राथमिक जांच से यह लगता है की बारिश के कारण पानी जमा गया था, जिसकी वजह से यह हादसा हुआ है। साथ ही इंसुलेशन फेल्यर के कारण केबल से करंट लीकेज हुआ तथा यह रेलवे की कार्य प्रणाली में किसी प्रकार की कमी नहीं है। ऐसा हादसा दोबारा न हो इसके लिए जांच की जा रही है।

बीजेपी के दो गुटों में हुई झड़प, गोलीबारी से एक नेता घायल

मधेपुरा । बिहार में बीजेपी के दो गुटों में हुई मारपीट के बाद गोलीबारी में एक नेता घायल हो गया है। जानकारी के अनुसार मधेपुरा जिले के मुरलीगंज गोल बाजार स्थित भगत धर्मशाला में बीजेपी की ओर से एक कार्यक्रम में दो पक्ष लोग आपस में ही भिड़ गए। यहां पर केंद्र में बीजेपी सरकार के 9 साल पूरा होने पर रविवार को प्रबुद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम में पूर्व डिप्टी सीएम तार किशोर प्रसाद सिंह और पूर्व मंत्री नीरज कुमार सिंह को शामिल होना थ। मगर कार्यक्रम की शुरुआत में ही दो गुट आपस में उलझ गए। आपसी विवाद मारपीट और गोलीबारी तक जा पहुंची। जिसमें एक भाजपा नेता गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें आनन-फानन में मुरलीगंज अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद मधेपुरा सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। घायल बीजेपी नेता का नाम संजय भगत बताया जा रहा है। वे पूर्व उपमुख्यमंत्री के रिश्तेदार बताए जा रहे हैं।

प्रान्तीय रक्षक दल हित संगठन का एक प्रतिनिधि मण्डल मंत्री रेखा आर्य से मिला

संवाददाता

देहरादून। प्रान्तीय रक्षक दल हित संगठन का एक प्रतिनिधि मण्डल प्रदेश अध्यक्ष प्रमोद मदरवाल के नेतृत्व में विभागीय मंत्री श्रीमति रेखा आर्य से मिलने उनके आवास यमुना कॉलोनी जा कर मिला, जिनका मुख्य उद्देश्य पी आर डी एक्ट में संशोधन विषयक तीन बिंदुओं पर वार्ता की गई। जिनमे से सबसे पहला बिंदु स्वयं सेवक शब्द को हटा कर पी आर डी कर्मचारी किया जाए तथा विभाग में पंजीकरण की प्रथा पी आर डी में ना की जाये। इन तीन बिंदुओं पर विभागीय मंत्री के साथ आधा घंटे बैठक में सकारात्मक वार्ता हुई और मंत्री ने संगठन को पूर्ण विश्वास/भरोसा दिलाते हुए आश्वासन दिया कि यह तीन बिंदु पी आर डी जवानों के हित में ही होंगे और रहेंगे। संगठन के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा मंत्री से आग्रह किया कि जो कुछ दिनों में पीआरडी एक्ट 2023, नियमावली

अंतिम समीक्षा बैठक होनी है उसमें हित संगठन का प्रतिनिधि मंडल भी रखा जाये, जिसमे माननीय मंत्री जी द्वारा हामी भरी गई। अंतिम समीक्षा बैठक मंत्री महोदया की अध्यक्षता नियमावली संशोधन में हित संगठन का प्रतिनिधी मण्डल एवं विभागीय प्रमुख सचिव, निदेशक, एवं विभागीय समस्त अधि कारियो के साथ नियमावली संशोधन के संबंध में। अंतिम समीक्षा बैठक में हित संगठन का प्रतिनिधि मंडल उपस्थित रहेगा । यह विश्वास और भरोसा मंत्री महोदय ने संगठन को दिलाया । इस वार्ता में उपस्थित पूर्व प्रदेश अध्यक्ष वीर सिंह रावत, जिला अध्यक्ष देहरादून गम्भीर सिंह रावत, प्रदेश सचिव अशोक शाह,नौगाई , भगत सिंह दानू आदि उपस्थित थे।

श्रद्धा पूर्वक मनाया गुरु हरगोबिंद साहिब जी का 428वां पावन प्रकाश पर्व

संवाददाता

देहरादून। सिख सेवक जत्थे की 62 वीं वर्ष गांठ के उपलक्ष्य में मीरी पीरी के मालिक छठे गुरु श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी का प्रकाश पर्व श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक कथा-कीर्तन के रूप में मनाया गया, इस अवसर पर होनहार छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा, आढ़त बाजार में आयोजित कार्यक्रम में नितनेम के पश्चात भाई चरणजीत सिंह ने आसा की वार का शब्द गायन किया। श्री अखण्ड पाठ साहिब के भोग के पश्चात भाई अमनदीप सिंह, मनप्रीत सिंह, हजुरी रागी भाई नरेन्दर सिंह एवं भाई गुरदयाल सिंह जी ने शब्द गायन किया। हेड ग्रंथी ज्ञानी शमशेर सिंह ने कहा कि गुरु हरगोबिंद साहिब जी का जीवन एक बड़े योद्धा के रूप में व परोपकारी वाला रहा है मीरी -पीरी की दो तलवारें पहन कर गुरु जी ने धर्म और राजनीति का सुमेल किया।

भाई मनजीत सिंह मीत देहरादून वालो ने शब्द पंज प्याले पंज पीर छटम पीर बैठा गुर भारी। हाई स्कूल एवं इंटर की बोर्ड परीक्षाओं में 90रू या उससे अधि क अंक प्राप्त करने वाले 35 छात्र दृ छात्राओं को "सिख सेवक गोल्डन अवार्ड " स्मृति चिन्ह से एवं छात्राओं को शाल तथा छात्रों को दस्तार एवं उनके माता-पिता को सम्मान दृ चिन्ह देकर सम्मानित किया। श्री गुरु सिंह सभा के प्रधान स. गुरबक्श सिंह राजन को सम्मान चिन्ह दे कर सम्मानित किया गया। दरबार श्री अमृतसर से पधारे भाई अमनदीप सिंह जी ने शब्द " दल भंजन गुर सुरमा, बढ़ जोद्धा बहु परोपकारी " का गायन कर संगत को निहाल किया। मंच का संचालन महासचिव सेवा सिंह मठारु ने किया। सब के भले की अरदास हेड ग्रंथी भाई शमशेर सिंह जी ने की। प्रधान स. गुलजार सिंह जी ने संगत को प्रकाश पर्व एवं होनहार छात्र-छात्राओं को वधाई दी। कार्यक्रम के पश्चात संगत ने गुरु का लंगर प्रसाद छका स इस अवसर पर जत्थे के प्रधान स. गुलजार सिंह, लीगल ऐडवाइजर स. गुरदीप सिंह टोनी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजिंदर सिंह राजा, उपाध्यक्ष सुरजीत सिंह कोहली, महासचिव सेवा सिंह मठारु, कोषाध्यक्ष सतनाम सिंह, सचिव अरविन्दर सिंह,गु. सिंह सभा के प्रधान गुरबक्श सिंह राजन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष जगमिंदर सिंह छाबड़ा, उपाध्यक्ष चरणजीत सिंह चन्नी, कोषाध्यक्ष मनजीत सिंह, जत्थे के जत्थेदार सोहन सिंह,सुरजीत सिंह जुतले, आर एस राणा, देवेंदर सिंह भसीन, गुरप्रीत सिंह जौली, हरप्रीत सिंह छाबड़ा, गुरप्रीत सिंह छाबड़ा, अमरजीत सिंह छाबड़ा, पूर्व पार्षद प्रवीण त्यागी, अरविन्द सिंह, गुरदियाल सिंह, लंगर सेवा स. इन्दर सिंह, हरजीत सिंह नत्था,हरभजन सिंह, ईश्वर सिंह,दविंदर सिंह सहदेव, दिलबाग सिंह,जगमोहन सिंह अरविन्द सिंह आदि कार्यक्रम को सुचारु रूप से चलने में सहयोग प्रदान कर रहे थे। सम्मानित होने वाली हाई स्कूल की छात्राओं में तरणदीप कौर 98.6रू, सिफत कौर, मनजप कौर, गुरलीन कौर, गुरनजर कौर, जसलीन कौर, प्रभरूप कौर, गुरप्रीत कौर, रमनीत कौर, रनप्रीत कौर, नियामत कौर गुलाटी, इंटर की छात्राओं में.. जसलीन कौर 96.8रू, कनिष्का कौर, हरविंदर कौर सहोता, कवलीन कौर, चरनप्रीत कौर, हरगुण कौर, प्रभलीन कौर, नमन कौर शामिल हैं। हाई स्कूल के छात्रों में गुरतेजस सिंह 98.4रू, जसमन सिंह, जीवनजोत सिंह, रमनीत सिंह, रब्बी सिंह, साहिबजीत सिंह, भूपिंदर सिंह, अर्शवीर सिंह, नीमरत राज सिंह, जसमन सिंह आनन्द हैं, जबकि इंटर के छात्रों में गुरनूर सिंह 98रू बिनीत सिंह चावला, रमनीक सिंह, जसकिरत सिंह एवं गुरकिरत सिंह शामिल हैं।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।